श्रीराधिका पाठावली

सम्पादक : गोपालचन्द्र घोष

वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन (भारत)

Sri Radhika Pathavali : Stotras dedicated to Radharani selected from old handwritten books preserved at the Vrindaban Research Institute, Vrindaban

आवरण चित्र –
श्रीनृत्यगोपाल शर्मा, चित्रकार द्वारा साभार

प्रकाशक :
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन–२८११२१ (उ. प्र.) भारत
दूरभाष : ०५६५–२५४०६२८, फैक्स : २५४०२७६
Website : www.thevri.org
email : vrivbn@sancharnet.in

© वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन
प्रथम संस्करण : २००३

मूल्य रु. १००/– एक सौ रुपये

मुद्रण–संयोजन : चित्रलेखा
बाग बुन्देला, लोई बाजार, वृन्दावन–२८११२१, दूरभाष : २४४२४१५

समर्पण

कलियुग पावनावतार प्रेम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु, जो कि नीलाचल श्रीजगन्नाथपुरी में 'गम्भीरा' नामक एक क्षुद्र प्रकोष्ठ में अन्तिम द्वादश वर्ष पर्यन्त राधाभावसिन्धु में निमग्न रहे, उन्हीं की पावन सन्निधि में यह 'श्रीराधिका-पाठावली' श्रद्धार्घ स्वरूप समर्पण।

दीन-
सम्पादक

।। जय श्रीश्रीराधाकान्त।।

STD - 06752
Phone : 232403

Mahant

Sri Dhyan Chandra Das Goswami

Sri 'Gambhira' Sri Radhakant Math
Puri-752001 (Orissa)

Date : 03.02.03

श्री श्री राधिकापाठावली नामक ग्रन्थ का प्रकाशन कर, वृन्दावन शोध संस्थान करुणामयी श्री श्री राधारानी के परम कृपा के भागी हैं; निसन्देह। इस ग्रन्थमें श्री राधातापनी श्री राधिकोपनिषद विभिन्न पुराण एवं यामलों से राधा स्तुति एवं अष्टक तथा सनत्कुमारसंहिता के राधासहस्रनाम, राधायन्त्र एवं विधि और मध्ययुगीन प्रणम्य आचार्यचरणों द्वारा रचित अष्टक एवं स्तोत्रावली से सुसज्जित यह ग्रन्थ भक्तहृदय को सदा आनन्द एवं कृपा से सरोवर रखे यही कामना करता हूँ।

इस ग्रन्थ के सम्पादक श्री गोपालचन्द्र घोष, साहित्यरत्न एवं संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं को मेरी शुभेच्छा है कि वे भविष्य में इस प्रकार प्रकाशन करते रहें। जै श्रीराधे!

3.2.03

दो शब्द

योगेश्वरेश्वर लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ब्रह्मसंहिता में "अनादिरादिर्गोविन्द सर्वकारणकारणं" निरूपण किया गया है। सच्चिदानन्दमय प्रभु के लीला, रूप, गुण, महिमा गोपाल–तापनी उपनिषद्, कृष्णोपनिषद् तथा पुराणों में वर्णित है। उनका प्रत्येक कार्य भक्तजनों के सुखविधान, गो–ब्राह्मण तथा धर्म की रक्षा में निहित है। उनकी पराशक्ति राधातत्त्व अति गूढ़ है। अनादिकाल से उपासना, चिन्तन एवं ध्यान का विषय रहा है। वैष्णव सम्प्रदायों में असंख्य भक्त साधकों ने विभिन्न अष्टक, स्तव–स्तोत्र द्वारा उनकी उपासना की है। विभिन्न पुराणों में राधा स्तोत्र कवचादि प्राप्य है। जगद्गुरु आद्य शंकराचार्यपाद ने यमुना अष्टक में राधा के साथ मुरारि को यमुना में विहार करते हुए वर्णन किया गया है। अन्य कृष्णाष्टकों आदि में राधा का नामोल्लेख है।

वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक सभापति स्व. रामदास गुप्त हिन्दी साहित्य के विद्वान् ही नहीं लन्दन विश्वविद्यालय में शिक्षक भी थे। स्वयं में कवि हृदय, भावुक भक्त भी थे। सन् १६७८ में उन्हें कुछ गोस्वामीवर्ग एवं साधु समाज के महन्तों ने कहा कि डाक्टर साहब ! बड़े–बड़े सूचीपत्र तथा शोध ग्रन्थों को तो आप प्रकाशित करने जा रहे हैं, परन्तु वृन्दावन के भक्तहृदय जनसाधारण के पाठ–पूजा में कुछ सहायक लघु ग्रन्थों के प्रकाशन पर ध्यान दें। प्रारम्भिक काल से सम्बद्ध संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष गोपालचन्द्रघोष को "गोपाल पाठावली" तैयार करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने निष्ठा के साथ महत्त्वपूर्ण पाठों का एक संकलन तैयार किया। "गोपाल पाठावली" के नाम से वह प्रकाशित हो गया। वह अति अत्यधिक जनप्रिय हुआ एवं अनेक स्थलों में नित्य पाठ का अंग बन गया। इसी शृंखला में

"राधापाठावली" का संकलन आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पाठावली में सभी सम्प्रदायों एवं पुराणादि से उद्धृत करके परिचयात्मक टिप्पणी एवं भूमिका के साथ प्रस्तुत किया गया है। चैतन्य सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा रचित अनेक अष्टक, स्तोत्रादि का इसमें समावेश नहीं किया जा सका। श्रीजी की कृपा हुई तो अगले प्रकाशन में समावेश करने का प्रयास करेंगे। जगन्नाथपुरी धाम श्रीराधाकान्त मठ 'गम्भीरा' के महन्त राजगुरु श्रीपाद ध्यानचन्द्रदास गोस्वामीजी ने अपना अभिमत प्रदान कर अनुग्रहीत किया। यह वही स्थान है, जहाँ प्रेमावतार श्रीचैतन्यदेव बारहवर्ष तक राधाभावसिन्धु में निमग्न रहे। उस स्थान पर उनके स्मृति चिह्न 'पादुका, आसन, कन्था, जलपात्र' आदि सुरक्षित हैं।

संस्थान के सहकर्मियों एवं श्रीहरिनाम प्रेस के डॉ. गिरिराज नांगिया व डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया को धन्यवाद देते हैं। उन्होंने बहुत ही मनोनिवेश के साथ इस कार्य का सम्पादन किया। संस्थान के समस्त पदाधिकारी, ग्रन्थदाता तथा हितैषीवृन्दों का आभार व्यक्त करते हैं। संस्थान के मानद सभापति श्रीमान रमेशचन्द्र त्रिपाठी, भूतपूर्व सचिव, लोकसभा दिल्ली, संस्थान के मानद सचिव श्रीमान राजकुमार गुप्त, एडवोकेट अलीगढ़, तथा संस्थान के भूतपूर्व निदेशक एवं हितैषी डॉ. नरेशचन्द्र बंसल के सुझाव एवं सहयोग के लिये आभार व्यक्त करते हैं। विश्वास है, पाठकवृन्द इस नित्य पाठोपयोगी पुस्तक से लाभ प्राप्त करेंगे।

आर. डी. पालीवाल
निदेशक
वृन्दावन शोध संस्थान

प्राक्कथन

राधा एवं कृष्ण के सम्बन्ध में, ऐतिहासिकता की पृष्ठभूमि में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा बहुत कुछ अध्ययन किया गया है तथा सभी भाषाओं में शोध प्रबन्धों का विस्तार भी हुआ है। राधा एवं कृष्ण का उल्लेख भारतीय वाङ्मय में अति प्राचीन है। यह तो निःसन्देह कहा जा सकता है कि, राधा और कृष्ण के मध्यकालीन उद्भावित स्वरूप चिन्तन के पीछे शताब्दियों की मान्य परम्परायें निहित हैं। शास्त्रीय एवं आचरण उभय पक्षों में राधाकृष्ण तत्त्व का विवेचन होता आया है। विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों में श्रीराधा के स्वरूप एवं उपासना की मान्यतायें पृथक्–पृथक् रही हैं। बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यिक डॉ. शशिभूषणदास गुप्त ने "राधा का क्रम विकास" ग्रन्थ में राधा का क्रमिक विकास के सम्बन्ध में जो विवेचन किया है, वह शोध की दृष्टि में स्तुत्य प्रयास है। वैष्णव सम्प्रदायों, विशेषकर व्रज के रसिक सम्प्रदायों द्वारा उद्भावित एवं उपासित राधातत्त्व का पुष्ट विवेचन नहीं हो पाया है। हिन्दी जगत् में डॉ. द्वारिकाप्रसाद मीतल का शोध ग्रन्थ "हिन्दी साहित्य में राधा" तथा वृन्दावन निम्बार्क शोध मण्डल, श्रीजीकी बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन से प्रकाशित मासिक सर्वेश्वर के 'राधा अंक' में एवं गो० पण्डित विद्यावागीश जी शास्त्री का राधासप्तशती एवं स्वामी हरिहरानन्द करपात्री जी कृत 'राधा सुधा' में ब्रज रसिक सम्प्रदायों की दृष्टि में राधातत्त्व पर गंभीर आलोक–पात किया गया है।

राधा शब्द 'राध्' संसिद्धौ धातु से बनता है। इसी तरह "राधस्" शब्द भी 'राध्' धातु से बनता है। राध् धातु से उणादि सूत्र में अस् हो जाने से राधस् ऐसा रूप बन जाता है। उसके तृतीया के एक वचन में राधसा ऐसा हो जाता है यानी राधा शब्द के तृतीया के एक वचन का राधया और राधस् शब्द के तृतीया के एक वचन का रूप राधसा

वेदों में राधा शब्द का प्रयोग कई स्थान पर है तथा एक मन्त्र ऋग्वेद एवं सामवेद में तथा अथर्ववेद में समान रूप से उपलब्ध है। विभिन्न विद्वानों ने इसका विरोध किया है, किन्हीं विद्वान् के मत से नक्षत्र आदि से है और कोई इन्द्र के विशेषण रूप में माना है। हालांकि वेदमूर्ति ब्रह्मलीन स्वामी गुरु गंगेश्वरानन्द जी महाराज ने, वेद के उन मन्त्रों को श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा परक स्वीकार किया है। श्रौतमुनि आश्रम, वृन्दावन से "वेदज्योति नामक वृहदाकार अभिनन्दन ग्रन्थ में उनका एक लेख में विवेचन हुआ है। पद्मपुराण पाताल खण्ड में (श्लोक ५०/५३–५७) तक श्रीराधाकृष्ण को परतत्त्व होने का पुष्ट प्रमाण नारद के वचनों में दर्शाया है उनमें से एक श्लोक जो कि चैतन्यचरितामृत में उद्धृत किया गया है–

"देवी कृष्णमयी प्रोक्ता राधिका परदेवता।
सर्व लक्ष्मी स्वरूपा सा कृष्णाह्लाद स्वरूपिनी।।"

विष्णुपुराण में पराशर मुनि भागवत की भाँति राधा का स्पष्ट उल्लेख नहीं करते हैं, परन्तु पंचम अंश के अध्याय तेरह श्लोक संख्या २३ से ४१ तक गोपियों के साथ–साथ कृष्ण की लीला में एक विशेष प्रेम पात्र सखी का वर्णन करते हैं–

"कापि तेन समायाता कृतपुण्या महालसा।
पदानि तस्याश्चैतानि घनान्यल्पतनूनि च।।"

(विष्णुपुराण, पंचम अंश, अः १३ श्लोक ३३)

श्रीमद्भागवत में द्वितीय स्कन्ध के चतुर्थ–अध्याय में शुकदेव जी मंगलाचरण में कहते हैं–

"नमो नमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां
विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनाम्।
निरस्त साम्यातिशयेन राधसा,
स्वधामनि ब्रह्मणि रम्यते नमः।।"

अर्थात् सात्वत्–भक्तों के पालनकर्त्ता, कुयोगिओं के लिए ज्ञान से परे उन मंगलमय प्रभु को नमस्कार करते हैं वे भगवान् कैसे हैं?

दोनों का एक ही अर्थ होता है। गर्ग संहिता में वर्णन आया है कि–श्रीनन्दनन्दन के पावन नाम रूप का स्मरण करती हुई, एवं उनके चरणकमलों में अपने चित्त को समाहित किये हुए, गोपियाँ श्रीकृष्णमयी हो गईं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि भृंगी कीट जैसे छोटे कीट को लाकर अपने मिट्टी के विल में रख कर तादात्मता प्रदान कराता है, और वह छोटा कीट उसका चिन्तन करते–करते, उसीका रूप धारण कर लेता है। यथा–

"श्रीकृष्णेति कृष्णेति गिरा वदन्त्यः, श्रीकृष्ण पादाम्बुजलग्नमानसाः,
श्रीकृष्णरूपास्तु वभूउरंगना,-श्चित्रं न पेश्यस्कृत कीटवत्।।"

–गर्ग संहिता

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध में कहा गया है–

"अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः।
यन्नोविहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः।।"

(श्रीमद्भागवत १० ।३० ।२८)

उपरोक्त श्लोक की टीका सनातन गोस्वामी पाद ने की है, विश्वनाथ चक्रवर्त्तीपाद ने भी विस्तार से की है। श्रीजीव पाद ने लघु वैष्णव तोषणी में, क्रम सन्दर्भ टीका में लिखा है कि–**"राधयति आराधयतीति राधा राधेति नामकरणाश्चदर्शितं"** अर्थात् जो आराधन करे उसे राधा कहते हैं, श्रीकृष्ण को इन्होंने ही रिझाया है और आराधना करके स्ववश कर लिया है। कृष्ण इनकी आराधना करते हैं या ये कृष्ण की आराधिका है इस कारण से इन्हें 'राधा' कहा गया है। श्रीकृष्ण की आत्मा श्रीराधा है और श्रीराधा की आत्मा श्रीकृष्ण हैं। चैतन्यचरितामृत रचयिता कृष्णदास कविराज गोस्वामी कहते हैं कि–**"राधाकृष्ण एक आत्मा दुई देह धरी। अन्यान्ये विलसे रस आस्वादन करि।।"** अर्थात् राधाकृष्ण एक आत्मा हैं अभेद हैं, लीला रस आस्वादन हेतु पृथक् कलेवर धारण किये हुए हैं। कृष्णोपनिषद् में उल्लेख है कि–**"वामांग सहिता देवी राधा वृन्दावनेश्वरी। सुन्दरी नागरी गौरी कृष्ण ह्रद्भृंग मंजरी"**।

स्वधामनि, अपने धाम वृन्दावन में राधसा अर्थात् श्रीराधा के साथ विहार करने वाले हैं। वह राधा कैसी हैं ? जिनसे बढ़कर तो क्या, समानता करने वाला भी कोई नहीं है।

भागवत के मर्मज्ञ टीकाकार श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती 'सारार्थदर्शिनी, में लिखते हैं–

"राधयतीति राधेति नाम व्यक्तिर्बभूवेति
मुनि प्रयत्नेन तदीय नामाप्यधात् परं।
किन्तु तदास्या चन्द्रास्स्वयं निरोतिस्म कृपानु,
तस्या सौभाग्यं मेर्य्या इव वादनार्थम्।।"

अर्थात् राधा नाम प्रगट हो गया। श्रीशुकदेव जी ने तो नाम छिपाने का प्रयास किया फिर भी प्रकाशित हो ही गया। आचार्य धनपति सूरि ने भी तदनुरूप ही कहा है। सम्मोहन तन्त्र, गौतमीय तन्त्र, रुद्रयामल तन्त्र, राधातन्त्र, कृष्णयामल, ब्रह्मयामल, माहेश्वर तन्त्र, उर्द्धाम्नाय तन्त्र एवं मन्त्र महोदधि आदि के सन्दर्भों तथा पुराणों के सन्दर्भ यदि राधातत्त्व के सम्बन्ध में एकत्र किया जाय तो पृथक् ग्रन्थ तैयार हो जावेगा। संस्कृत वाङ्मय काव्य साहित्य में, दो सहस्र वर्ष पूर्व लगभग ईसा के पहली शताब्दी में लिखी गई प्राकृत रचना 'गाथा सप्तशती' में राधा का वर्णन प्राप्त है। पंचतन्त्र दूसरी शताब्दी से पाँचवीं शताब्दि के मध्य की रचना में मित्रलाभ–प्रथमतन्त्र में राधा का वर्णन मिलता है। धनंजय कृत "दशरूपक" के चतुर्थ प्रकाश में रुद्रकवि के दो श्लोकों में राधातत्त्व का दर्शन होता है। भट्टनारायण का "वेणीसंहार काव्य" जो कि ७५० ई० के आसपास का माना जाता है प्रथम अंक में केलि कुपिता अश्रुसिक्ता राधा का वर्णन है। ई० ८५० में रचित आनन्दवर्धन का 'धन्वालोक' में 'तेषां गोपवधू विलाससुहृदां राधारहः साक्षिणां.....आदि धन्वालोक द्वितीय उद्योत, कारिका ५ में राधा का प्रसंग है। मालवा के राजा भोज ने 'सरस्वती कण्ठाभरण" में प्राचीन ग्रन्थों से राधा विषयक आठ श्लोक उद्धृत किये हैं। कविवर क्षेमेन्द्र का 'दशावतार' जोकि काश्मीर के प्रौढ़कवि माने जाते हैं उनका काल १०६६ ई० माना जा सकता है। दशावतार चरित में विष्णु के दस

अवतारों का विशद वर्णन है। उसमें कृष्णावतार प्रसंग में राधा को कृष्ण की प्रधान प्रेयसी रूप में दर्शाया गया है। महाकवि कालिदास की रचनाओं में वृन्दावन और राधाकृष्ण का उल्लेख है। विक्रमदेव चरित जो कि काश्मीर के कवि 'विल्हण' रचित उच्चकोटि का ऐतिहासिक काव्य है। विल्हण का समय ग्यारहवीं शताब्दी ईसवी का माना जाता है, राधा के सम्बन्ध में मार्मिक प्रसंग है। झूला प्रसंग में राधा का वर्णन है। उन्होंने वृन्दावन में कई दिनों तक निवास किया ऐसा उल्लेख प्राप्त है। जैन साहित्यकारों में आचार्य हेमचन्द्र जी व्याकरण ग्रन्थ 'काव्यानुशासन' आदि में राधा को प्रधान गोपिका के रूप में दर्शाया है। विरहिनी राधा का भी वर्णन है। इनका काल ई० १०८५–८६ का आँका है।

आचार्य हेमचन्द्र के शिष्य रामचन्द्र सूरि, समय ११०० से ११७५ ई० अनुमानित ने गुणचन्द्र के सहयोग से नाट्यशास्त्र सम्बन्धी 'नाट्य दर्पण' नामक ग्रन्थ लिखा और उसमें दसवीं सदी के पूर्व के भेज्जल कवि लिखित "राधा–विप्रलम्भ" नामक नाटक का उल्लेख है। दसवीं शताब्दी में त्रिविक्रम भट्ट ने 'नल–चम्पू' की रचना की। एक श्लोक के अर्थ में–"कला कौशल से चतुरा राधा, परम पुरुष मायामय केशीहन्ता के प्रति अनुरक्त है।" दसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में विभिन्न काव्य के टीकाकार बल्लभदेव ने माघकृत "शिशुपाल वध" के ४–३५ श्लोक व्याख्या में राधाकृष्ण के नाम युक्त एक श्लोक किसी प्राचीन ग्रन्थ से उद्धृत किया है। दसवीं शताब्दी के "सोमदेव सूरि" ने यशस्तिलक में राधा का उल्लेख किया है। ग्यारहवीं सदी के वाक्पति कवि ने राधा को विरहातुर दर्शाया है। कवीन्द्रवचनसमुच्चय रचना दसवीं शताब्दी का माना जाता है उसमें संगृहीत कविताएँ हैं। इसमें राधाकृष्ण सम्बन्धित विभिन्न कवियों के चार पद संगृहीत हैं, निश्चय वे उसकाल से अधिक पुराने रहे होंगे। ११वीं सदी के वाक्पति के पूर्व पिंगलाचार्य "प्राकृत पिंगल सूत्र" एवं लक्ष्मीनाथ कृत वृत्ति में राधाकृष्ण एवं विष्णु का वर्णन प्राप्त होता है। जयदेव कवि कृतः "गीत गोविन्द महाकाव्य" आध्यात्मिक एवं साहित्यिक ख्याति प्राप्त है। इनके समसामयिक कवि

गोवर्धनाचार्य ने गीति काव्य "आर्या सप्तशती" में राधा का वर्णन किया है। परवर्त्ती वैष्णव सम्प्रदाय एवं तदशाखा सम्प्रदायों में विभिन्न रूप में राधा पूजा पाती है। व्रजमण्डल एवं आसपास का क्षेत्र, उड़ीसा, बंगला, विहार, मणिपुर, त्रिपुरा, पंजाब, गुजरात, मध्यभारत एवं हिमाचल के अल्प भागों में, राधाकृष्ण की उपासना प्रचलित है। आसाम के प्राचीन साहित्य में राधा का नाम साधारण गोपिकाओं में है। दक्षिणभारत में श्रीगोदादेवी रंगनायिकी जिन्हें आण्डाल भी कहा जाता है उनकी चेष्टा एवं 'त्रिरुप्पावई' रचना राधा भाव से परिपूरित है। कृष्ण प्राप्ति की चेष्टा इन पदों में समाविष्ट है। धनुर्मासोत्सव श्रीवैष्णव मन्दिरों में गायन एवं विशेष अर्चना होती है।

आजकल के तर्कवादी एवं सुविधावादी कतिपय महाशयों के वृथा तर्क पर राधातत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ईसा पूर्व से २१वीं सदी तक विभिन्न प्राचीन संस्कृत काव्यों, प्राकृत पाली साहित्यों में राधा का उल्लेख एक प्राचीनता का प्रमाण है। पुराणों एवं तन्त्रों के प्रमाण को भले ही कोई न माने परन्तु इन वाङ्मय साहित्य के प्रमाण ही यथेष्ट हैं। पाँचवी, छठी शताब्दी के लगभग प्राप्त मूर्तिओं, शिलालेखों और ताम्रपत्रों में भी राधा का स्वरूप का परिज्ञान होता है। पहाड़पुर की मूर्तियों को पुरातत्वविदों ने राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं की मूर्ति रूप में पुष्टि की है। उड़ीसा, असम, मध्यभारत तथा बंगाल के शिलालेखों व ताम्रफलकों का ऐतिहासिक महत्त्व है। बारहवीं सदी तक 'गीतगोविन्द' जयदेव कृत, लीला शुक विल्वमंगल कृत 'कृष्णकर्णामृत' में श्रीराधा पूर्णरूपेण महिमान्वित हैं। भगवान् निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैतवाद का प्रचार किया। जीव और जगत् की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। वे सर्वेश्वर प्रभु के आश्रित हैं। कृष्ण एवं राधा की समान महत्ता इस सम्प्रदाय में दृष्टिगोचर होती है। राधा कृष्ण के साथ गोलोक धाम निवासिनी है। राधा कृष्ण की ह्लादिनी एवं प्राणेश्वरी है। श्रीचैतन्य सम्प्रदाय एक वृहद्वैष्णव सम्प्रदाय है। इसके मूल प्रवर्त्तक भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु हैं। उनका सिद्धान्त अचिन्त्य भेदाभेदवाद कहलाता है। चैतन्य सम्प्रदाय में राधा का एक विशिष्ट स्थान है। महाप्रभु

चैतन्यदेव ने दास्य, शान्त, सख्य, वात्सल्य एवं मधुर भाव को प्रमुख स्थान दिया। महाप्रभु के इस भावधारा के धारक एवं प्रचारक उनके कृपा पात्रों छह गोस्वामियों श्रीरूप, सनातन, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट, श्रीजीव, रघुनाथदास तथा चौसठ महन्तों ने बंगाल, उड़ीसा, मणिपुर, त्रिपुरा तथा मुख्य रूप से वृन्दावन एवं ब्रजमण्डल में प्रचार–प्रसार किया। मन्दिर, मठ एवं उनमें श्रीराधाकृष्ण युगल उपास्य विग्रह की उपासना का स्थायी प्रचलन हुआ। श्रीकृष्ण अनन्त गुण सम्पन्न पूर्णानन्दघनीभूत विग्रह हैं और श्रीराधा महाभाव स्वरूपा हैं और गोपियाँ प्रेम एवं आनन्द की शक्ति स्वरूपा हैं। महाप्रभुजी अपने प्रकटकाल में अन्तिम द्वादशवर्ष पर्यन्त श्रीराधा की विप्रलम्भ दशा में आस्वादन करते रहे।

वल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक श्रीवल्लभाचार्य हैं। शुद्धाद्वैत सिद्धान्त के अर्न्तगत इनका मत पुष्टिमार्ग भक्ति कहलाता है। आपने विशुद्ध प्रेम को शुद्ध पुष्टि की संज्ञा दी है, गोपियाँ विशुद्ध प्रेम की ध्वजा हैं। पुष्टि प्रवाह ग्रन्थ में आपका विचार देखा जा सकता है। पुष्टि मार्ग के अनुसार शक्ति, शक्तिमान के अधीन हैं। श्रीराधा और कृष्ण पुष्टिमार्ग में एक हैं। गोपियाँ भी उनसे अभिन्न हैं। इस मत में स्वकीय एवं परकीय भाव दोनों ही स्वीकार्य हैं। आचार्य चरण ने अपने इष्ट को 'मधुराधिपति' कहा है, उनके अंग प्रत्यंग, चेष्टा हाव–भाव सभी मधुराति मधुर हैं। आचार्यचरण ने "परिवृढ़ाष्टकं" में पशुपजा से तात्पर्य राधा का किया है। आचार्य श्री के पश्चात् उनके आत्मज श्रीविट्ठलनाथ गोस्वामी ने इस सम्प्रदाय में अपने साहित्य में राधा रहस्य को उजागर किया। उनके द्वारा रचित, 'भुजंगप्रयाताष्टकं, "राधा प्रार्थना चतुःश्लोकी" 'श्रीस्वामिन्याष्टकं' 'श्रीस्वामिनी स्तोत्रं' तथा "शृंगार–रस–मण्डनम्" राधा उपासना को इस मार्ग में प्रबुद्ध स्थान दिलाया है। डॉ. शशिभूषणदास गुप्त ने इसे चैतन्य मत का प्रभाव कहा है। पुष्टिमार्ग के प्रतिष्ठित आचार्य हरिराय ने कृष्ण के चिन्तन के लिए राधा का चिन्तन माध्यम बताया है। सूरदास के सूरसागर में राधाकृष्ण का प्रेम का विस्तार से वर्णन किया गया है। अष्टछाप कवियों की काव्य धारा में राधा नव

नवायमान हैं। सखी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक स्वामी हरिदास जी हैं, उन्होंने युगल उपासना का सखीभाव से प्रचार किया है उनके रचित 'केलिमाल' निकुञ्जलीला की पराकाष्ठा है। स्वामी जी के राधाकृष्ण का आविर्भाव या अन्तर्ध्यान नहीं है। उनके राधिका और कृष्ण ब्रजविहारी न होकर कुञ्जविहारी हैं और अजन्मा हैं। स्वामी हरिदासजी की भावधारा एवं परम्परा को समुज्वल रूप रस प्रदान करने का श्रेय अष्टाचार्यों को जाता है। भगवत रसिकदेव की वाणी में–

"कोऊ स्वकीया कोउ परकीया, कल्प कियो मतवादि।
जोरी भगवत रसिक को, नित्य अनन्त अनादि।।"

(भगवत रसिकजी की वाणी)

राधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक श्रीहित हरिवंश गोस्वामी जी वंशी के अवतार रूप में मान्य हैं। आपने विशुद्ध प्रेम तत्त्व को ही अनेक रूपों में विद्यमान माना है। नित्य विहार में युगल राधाकृष्ण, वृन्दावनधाम और सहचरीवृन्द यह चारों रूपों में व्याप्त हैं। हरिवंश जी ने कृष्ण की अपेक्षा राधारानी की पूजा आराधना और भक्ति को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। अन्य सम्प्रदायों में कृष्ण ही परमतत्त्व हैं और राधा ह्लादिनी शक्ति हैं। परन्तु राधावल्लभ सम्प्रदाय में श्रीराधा परम तत्त्व हैं, स्वयं श्रीकृष्ण उनकी चरण सेवा में लीन हैं। इस सम्प्रदाय में राधारानी ही इष्ट हैं, आचार्या एवं मन्त्रदात्री गुरु और मन्त्ररूपा हैं। सिद्धान्त मुक्तावली में दोहा ५५ में इस प्रकार वर्णन है।

"हित समुद्र हरिवंश जू चित समुद्र घनश्याम।
आनन्द सिन्धु श्रीराधिका भाव सु सेवक नाम।।"

अस्तु। प्रस्तुत "श्रीराधापाठावली" नामक संग्रह ग्रन्थ में वृन्दावन शोध संस्थान में सुरक्षित राधा सम्बन्धित स्तोत्र, कवच, अष्टक, शतनाम एवं सहस्रनामादि क्रमशः उपस्थित किया गया है। इनमें से अधिकांश किसी न किसी रूप में प्रकाशित उपलब्ध है परन्तु संस्थान में प्राचीन हस्तलिपियों में उपलब्ध होना, श्रीराधारानी की कृपा है। फिर भी ब्रह्मयामल का 'राधाया विरुपाक्ष स्तोत्रं" तथा 'श्रीराधा कवचम्' सनत्कुमार

तन्त्रोक्त 'राधासहस्रनाम' एवं गौतमीय तन्त्रोक्त 'राधा स्तवराज' आदि अप्रकाशित ही है। भक्त हृदय महानुभावों एवं साधकों के लिये एक स्थान पर विभिन्न राधारानी सम्बन्धी स्तव स्तोत्रादि संगृहीत होकर प्रकाश में आना एवं "श्रीराधापाठावली" का स्वरूप प्राप्त होने में सर्व प्रथम संस्थान के सभापति मान्यवर श्रीमान् आर. सी. त्रिपाठी, पूर्व महासचिव, राज्य सभा, नई दिल्ली, मान्यवर निदेशक श्रीमान् आर. डी. पालीवाल सहायक जिलाधिकारी, मथुरा, संस्थान के सचिव श्रीमान् राजकुमार गुप्त एडवोकेट, अलीगढ़, डॉ. नरेशचन्द्र बंसल, पूर्व निदेशक शोध संस्थान के हम विशेष ऋणी हैं जिन्होंने इस कार्य हेतु आज्ञा प्रदान की एवं उत्साह बढ़ाया। संस्थान के सभी सहकर्मियों को धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। पाठक वर्गों से निवेदन है कि यदि कोई अशुद्धि दृष्टिगोचर हो तो सूचित करें ताकि आगामी प्रकाशन में सुधार कर लिया जाये।

निवेदक :

गोपालचन्द्र घोष

अनुक्रम

क्र.	विवरण		पृष्ठ
१.	श्रीराधिकोपनिषत्	ऋग्वेद	१७
२.	श्रीराधिका तापिनी उपनिषद्	अथर्ववेद	२०
३.	श्रीराधिका कवचं	ब्रह्मवैवर्त्तपुराण	२३
४.	श्रीराधिका कवचं	नारद पांचरात्र	२७
५.	श्रीराधाया सप्तत्रिंशनाम स्तोत्रम्	नारद पांचरात्र	३१
६.	श्रीराधा कवचं	ब्रह्मयामल	३२
७.	त्रैलोक्य विक्रम–राधा कवचं	सम्मोहन तन्त्र	३५
८.	श्रीराधास्तोत्रम्	सनत्कुमार संहिता	३६
९.	श्रीराधिका अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं	ऊर्द्धाम्नाय तन्त्र	४१
१०.	श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्रं	ऊर्द्धाम्नाय तन्त्र	४४
११.	श्रीराधिका स्तवराज	गौतमीय तन्त्र	४७
१२.	श्रीराधाया विरूपाक्ष स्तुतिः	ब्रह्मयामल	५१
१३.	श्रीराधिका सहस्रनाम स्तोत्रं	सनत्कुमार तन्त्र	५५
१४.	श्रीराधाष्टकम्	जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य	६६
१५.	श्रीराधिकाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं	भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु	६८
१६.	चाटुपुष्पाञ्जलि स्तोत्रः	श्रीपाद रूप गोस्वामी	७१
१७.	श्रीराधिकायाः प्रेमाम्भोज मरन्दाख्य स्तवराजः	श्रीमद्रघुनाथदास गोस्वामी	७५
१८.	श्रीराधिका स्तुति	श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती	७८
१९.	श्रीराधा–प्रार्थना चतुःश्लोकी	श्रीविट्ठलनाथ गोस्वामी	८०
२०.	श्रीराधिकाष्टक	श्रीमोहनचन्द्र गोस्वामी	८२
२१.	श्रीराधिकाष्टकम्	श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी	८५
२२.	श्रीराधिका ध्यानामृत स्तोत्रं	श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती	८८
२३.	श्रीराधाष्टकम्	अज्ञात भक्त	९४
२४.	श्रीराधा स्तोत्रम्	श्रीवनमालिदास शास्त्री	९७
२५.	श्रीराधिका यन्त्र एवं पूजा विधि	सम्पादक	९९

श्रीश्रीराधा–कृष्ण
बंगला शैली का एक प्राचीन चित्र

बाबा श्रीगौरांगदास जी महाराज द्वारा सेवित
श्रीश्रीप्रिया–प्रियतम, रमणरेती, वृन्दावन

ऋग्वेदान्तर्गत

श्रीराधिकोपनिषत्

वेदों में मन्त्र अमोघ हैं एवं उसका तात्पर्य तथा रहस्य विद्वानों ने विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वानों के मतानुसार जिन उपनिषदों की टीका जगद्गुरु शंकराचार्य पाद ने नहीं की वे सभी परवर्त्तीकाल की हैं। यह अवधारणा सीमित है। क्योंकि अनेक आचार्य एवं विद्वान शैव तथा वैष्णव उपनिषद् के रूप में विभाजन कर प्रसंगतः सन्दर्भ प्रस्तुत करते रहे हैं। आखिर वे भी मनीषि थे, चिन्तक थे, भक्त एवं उपासक थे, अतः 'राधिकोपनिषत्' को भक्त एवं उपासकों के लिए उपस्थित किया है। ऋग्वेद राधिकोपनिषत् के आधार पर कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति, सभी शक्तियों में प्रधान हैं। यही परमाशक्ति श्रीराधा हैं। ये कृष्ण की आराधिका हैं और कृष्ण इनकी आराधना करते हैं। दार्शनिक भित्ति पर परस्पर अभिन्न हैं। मूल प्रकृति रूप में मान्यता है।

श्रीश्रीराधिकायै नमः

श्रीराधिकोपनिषद्

ॐ अथोर्ध्वमन्थिन ऋषयः सनकाद्या भगवन्तं हिरण्यगर्भमुपासित्वोचुः। देव कः परमोदेवः का वा तच्छक्तयः, ता सु.च का वरीयसी भवतीति सृष्टि हेतु भूता च ? एभिः सहोवाच–'हे पुत्रकाः शृणुतेदं हुवाव गुह्यादगुह्यतरम प्रकाश्यं यस्मै कस्मै न देयम्। स्निग्धाय ब्रह्मवादिने गुरुभक्ताय देयमन्यथादातुर्महदघं भवतीति। कृष्णो ह वै हरिः परमो देवः षड़विधैश्वर्य परिपूर्णो भगवान् गोपीगोपसेव्यो वृन्दाऽऽराधितो वृन्दावनाधिनाथः स एक एवेश्वरः तस्य ह वै हे तनुर्नारायणोऽखिल ब्रह्माण्डाधिपतिरेकोशः प्रकृतेः प्राचीनो नित्यः एवं हि तस्य शक्तयस्त्वदेकधा। आह्लादिनी सन्धिनीज्ञानेच्छाक्रियाद्याः शक्तयः तास्वाह्लादिनी वरीयसी परमान्तरंगभूता राधा। कृष्णेन आराध्यते इति राधा। कृष्णं समाराधयति सदेति राधिका गान्धर्वेति व्यपदिश्यत इति। अस्या एव कायव्यूहरूपा गोप्यो महिष्यः श्रीश्चेति। ये यां राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहेनैकः क्रीड़नार्थं द्विधाऽभूत्। एषा वै हरेः सर्वेश्वरी सर्वविद्या सनातनी कृष्ण प्राणाधिदेवीचेति, विभक्ते वेदाः स्तुवन्ति, यस्या गतिं ब्रह्मभागा वदन्ति। महिमाऽस्याः स्वायुर्माने नापिकालेन वक्तुं न चेत्सहे। सैवं यस्य प्रसीदति, तस्य करतल विकलितं परमं धामेति। एतामवज्ञाय यः कृष्णमाराधयितुमिच्छति, स मूढ़तमो मूढ़तमश्चेति। अथ हैतानि नामानि गायन्ति श्रुतयः।

राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमन्त्राधिदेवता।
सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावन विहारिणी।।
वृन्दाराध्या रमाऽशेष गोपीमण्डल पूजिता।
सत्या सत्य परा सत्यभामा श्रीकृष्ण वल्लभा।।
वृषभानु सुता गोपी मूल प्रकृतिरीश्वरी।
गान्धर्वा राधिका रम्या रुक्मिणी परमेश्वरी।।
परात्परतरापूर्णा पूर्णचन्द्र निभानना।
मुक्ति भुक्ति प्रदा नित्यं भव व्याधिविनाशिनी।।

इत्येतानि नामानि यः पठेत्स जीवन्मुक्तो भवति। इत्याह हिरण्यगर्भो भगवानिति। सन्धिनी तु धाम भूषण शय्यासनादिभिन्न भृत्यादिरूपेण परिणता मृत्युलोकावतारण काले मातृपितृरूपेण चाऽऽसीदित्यनेकावतार कारण ज्ञान शक्तिस्तु क्षेत्रज्ञशक्तिरिति। इच्छान्तर्भूता माया सत्व रजस्तमोमयि वहिरंगा जगत्कारणभूता सैवाऽविद्या रूपेण जीवबन्धनभूता सैवाऽविद्या रूपेण जीव–बन्धनभूता क्रिया शक्तिस्तु लीलाशक्तिरिति इमामुपनिषदमधीते, सोऽव्रती व्रती भवति, सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति, सोऽग्निपूतो भवति, स वायुपूतो भवति, स सर्वपूतो भवति, राधाकृष्ण प्रियः भवति स यावच्चक्षुः पात पंक्ती पुनाति। ॐ तत्सत् इति ऋग्वेदे• ब्रह्मभागे परम रहस्ये श्रीराधिकोपनिषत् सम्पूर्णम्।।

• किन्ही किन्ही प्रतियों में अथर्ववेदे भी उल्लेख है।

अथर्ववेदोक्त

राधिका तापिनी उपनिषद्

राधिका तापिनी उपनिषद् की धारणा अथर्ववेद में की गई है। इसमें राधिका जी की सशक्त स्तुति है और सर्वश्रेष्ठ बतलाई गई है। श्रीकृष्ण का प्रेम एवं अखण्ड आनन्द की अनुभूति राधा के कारण है। सम्पूर्ण उपास्य देवताओं में देवत्व शक्ति राधिका तत्त्व से प्रकट होती हैं। सर्वशक्तिमयी राधा की लवलेशमात्र कृपा से देवगण प्रसन्न होकर नृत्य करते हैं और ईषत भ्रूवक्र होने पर काँप उठते हैं। वे सदा दूषण से रहित रहने हेतु राधाजी की प्रार्थना करते हैं।

राधा और कृष्ण दोनों एक अखण्ड रस के सागर हैं, मात्र भक्तों को आनन्द प्रदान करने और लीला सम्पादनार्थ एक प्राण दो देही रूप में विराजित हैं। जिन्होंने वृन्दावन में अद्भुत रासकेलि द्वारा देव, गन्धर्व, किन्नर, चर–अचर सभी को प्रेमोन्मत्त कर दिया, उन परमानन्दमय रसराशि को प्रणाम एवं वन्दनात्मक यह उपनिषद् है। वैष्णव आचार्यों ने इस उपनिषद् का उद्धरण यथा स्थान पर सन्निवेश किया है।

श्रीराधिका तापिनी उपनिषद्

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ भद्र कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्र पश्ये मोक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रंगैस्तुष्टुवासस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।
ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !

ब्रह्मवादिनो वदन्ति, कस्माद्राधिकामुपासते आदित्यो–ऽभ्यद्रवत्।।१।। श्रुतयः ऊचुः। सर्वाणि राधिकाया दैवतानि सर्वाणि भूतानि राधिकायास्तां नमामः।।२।। देवतायतनानि कम्पन्ते राधाया हसन्ति नृत्यन्ति च सर्वाणि राधा दैवतानि। सर्व पाप क्षमायेति व्याहृतिभिर्हुत्वायथ राधिकायै नमामः।।३।। भासा यस्याः कृष्ण देहोऽपि गौरो जायते देवस्येन्द्रनीलप्रभस्य। भृंगाः काकाः कोकिलाश्चापि गौरास्तां राधिकां विश्वधात्री नमामः।।४।। यस्या अगम्यतां श्रुतयः सांख्ययोगा वेदान्तानि ब्रह्मभावं वदन्ति। न यां पुराणानि विदन्ति सम्यक् तां राधिकां देवधात्रीं नमामः।।५।। जगद्भर्त्तुविश्वसम्मोहनस्य श्रीकृष्णस्य प्राणतोऽधिकामपि। वृन्दारण्ये स्वेष्टदेवीं च नित्यं तां राधिकां वरधात्रीं नमामः।।६।। यस्य रेणुं पादयोर्विश्वभर्त्ता धरते मूर्ध्नि रहसि प्रेमयुक्तः स्रस्तवेणुः कवरीं न स्मरेद्यल्लीनः क्रीतवत्तु तां नमामः।।७।। यस्याः क्रीड़ां चन्द्रमा देवपत्न्यो दृष्ट्वा नग्ना आत्मनो न स्मरन्ति। वृन्दारण्ये, स्थावरा, जंगमाश्च भावाविष्टां राधिकां तां नमामः।।८।। यस्या अंके विलुण्ठन् कृष्ण देवो गोलोकाख्यं नैव सस्मार धामपदं सांशा कमला शैलपुत्री तां राधिकां शक्तिधात्रीं नमामः ।।९।। स्वरैः ग्रामैश्च त्रिभिर्मूर्च्छनाभिर्गीतां देवीं सखिभिः प्रेमवद्धा। ब्राह्मीं निशां

अथर्ववेदोक्त

राधिका तापिनी उपनिषद्

राधिका तापिनी उपनिषद् की धारणा अथर्ववेद में की गई है। इसमें राधिका जी की सशक्त स्तुति है और सर्वश्रेष्ठ बतलाई गई है। श्रीकृष्ण का प्रेम एवं अखण्ड आनन्द की अनुभूति राधा के कारण है। सम्पूर्ण उपास्य देवताओं में देवत्व शक्ति राधिका तत्त्व से प्रकट होती हैं। सर्वशक्तिमयी राधा की लवलेशमात्र कृपा से देवगण प्रसन्न होकर नृत्य करते हैं और ईषत भ्रूवक्र होने पर काँप उठते हैं। वे सदा दूषण से रहित रहने हेतु राधाजी की प्रार्थना करते हैं।

राधा और कृष्ण दोनों एक अखण्ड रस के सागर हैं, मात्र भक्तों को आनन्द प्रदान करने और लीला सम्पादनार्थ एक प्राण दो देही रूप में विराजित हैं। जिन्होंने वृन्दावन में अद्‌भुत रासकेलि द्वारा देव, गन्धर्व, किन्नर, चर–अचर सभी को प्रेमोन्मत्त कर दिया, उन परमानन्दमय रसराशि को प्रणाम एवं वन्दनात्मक यह उपनिषद् है। वैष्णव आचार्यों ने इस उपनिषद् का उद्धरण यथा स्थान पर सन्निवेश किया है।

श्रीराधिका तापिनी उपनिषद्

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ भद्र कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्र पश्ये मोक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रंगैस्तुष्टुवासस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।
ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !

ब्रह्मवादिनो वदन्ति, कस्माद्राधिकामुपासते आदित्यो–ऽभ्यद्रवत्।।१।। श्रुतयः ऊचुः। सर्वाणि राधिकाया दैवतानि सर्वाणि भूतानि राधिकायास्तां नमामः।।२।। देवतायतनानि कम्पन्ते राधाया हसन्ति नृत्यन्ति च सर्वाणि राधा दैवतानि। सर्व पाप क्षमायेति व्याहृतिभिर्हुत्वायथ राधिकायै नमामः।।३।। भासा यस्याः कृष्ण देहोऽपि गौरो जायते देवस्येन्द्रनीलप्रभस्य। भृंगाः काकाः कोकिलाश्चापि गौरास्तां राधिकां विश्वधात्री नमामः।।४।। यस्या अगम्यतां श्रुतयः सांख्ययोगा वेदान्तानि ब्रह्मभावं वदन्ति। न यां पुराणानि विदन्ति सम्यक् तां राधिकां देवधात्रीं नमामः।।५।। जगद्भर्त्तुंविश्वसम्मोहनस्य श्रीकृष्णस्य प्राणतोऽधिकामपि। वृन्दारण्ये स्वेष्टदेवीं च नित्यं तां राधिकां वरधात्रीं नमामः।।६।। यस्य रेणुं पादयोर्विश्वभर्त्ता धरते मूर्ध्नि रहसि प्रेमयुक्तः स्रस्तवेणुः कवरीं न स्मरेद्यल्लीनः क्रीतवत्तु तां नमामः।।७।। यस्याः क्रीड़ां चन्द्रमा देवपत्न्यो दृष्ट्वा नग्ना आत्मनो न स्मरन्ति। वृन्दारण्ये, स्थावरा, जंगमाश्च भावाविष्टां राधिकां तां नमामः।।८।। यस्या अंके विलुण्ठन् कृष्ण देवो गोलोकाख्यं नैव सस्मार धामपदं सांशा कमला शैलपुत्री तां राधिकां शक्तिधात्रीं नमामः ।।९।। स्वरैः ग्रामैश्च त्रिभिर्मूर्च्छनाभिर्गीतां देवीं सखिभिः प्रेमवद्धा। ब्राह्मीं निशां

याऽतनोदेक शक्त्या वृन्दारण्ये राधिकां तां नमामः।।१०।। क्वचिद्भूत्वा द्विभुजा कृष्णदेहा वंशीरन्ध्रैवादयामासचक्रे। यस्या भूषां कुन्दमन्दार पुष्पैर्मालां कृत्वाअनुनयेद्देवदेवः।।११।। येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिदेहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत्। देहोयथा छायया शोभमानः शृण्वन् पठन् याति तद्धाम् शुद्धम्।।१२।। वशिष्ठं च वृहस्पतिं चार्वागध्यापयति यजमानस्यर्बाहस्पत्यश्च।।१३।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णत्पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !

इति श्रीराधिका तापिनी उपनिषद् समाप्तं।।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणोक्त

श्रीराधिकाकवचम्

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में राधातत्त्व का सशक्त प्रमाण उपस्थित किया गया है। कहते हैं–'राधा शब्दस्य व्युत्पत्तिः सामवेदे निरूपिता' अर्थात् राधा शब्द की व्युत्पत्ति का निरूपण सामवेद में हुआ है। राधा उपासना का विवरण इस पुराण में प्रचुर मात्रा में है। प्रकृति खण्ड के अध्याय ५५ में राधा ध्यानं, षोड़शोपचार पूजा, स्तुति एवं ५६वें अध्याय में श्रीराधा कवच में सर्वशक्तिमयी राधा के मन्त्रात्मक रक्षा हेतु विधान है। इसका पाठ एवं ध्यान तथा धारण करने वाला सभी विपत्तियों से रक्षा पायेगा, आध्यात्मिक, ऐश्वर्य, स्मृति, पराज्ञान, प्रेमाभक्ति आदि का लाभ प्राप्त होगा। बंगाल, उड़ीसा, त्रिपुरा आदि प्रान्तों में इस कवच का धारण एवं पठन श्रद्धा से सम्पन्न होता है। मिथिला एवं तिरहूत में भी पाठ होता है।

श्रीराधिका-कवचम्

।। श्रीगणेशाय नमः।।

महेश्वर उवाच

श्रीजगन्मंगल स्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।।१।।
ऋषिश्छन्दोऽस्य गायत्री देवी रासेश्वरी स्वयं।
श्रीकृष्ण भक्ति सम्प्राप्ति विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।२।।
शिष्याय कृष्ण भक्ताय ब्राह्मणाय प्रकाशयेत्।
शठाय परशिष्याय दत्त्वा मृत्युमवाप्नुयात्।।३।।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं कवच प्रिये।
कण्ठे धृत मिदं भक्तया कृष्णेन परमात्मना।।४।।
मया दृष्टं च गोलोके ब्रह्मणा विष्णुना पुरा।
ॐ राधेति चतुर्थ्यन्तं बह्नि जायान्त मेव च।।५।।
कृष्णेनोपासितो मन्त्रः कल्प-वृक्षः शिरोऽवतु।
ॐ ह्रीं श्रीं राधिकांगेन्तं बह्नि जायान्त मे वच।।६।।
कपालं नेत्र युग्मं च श्रोत्र युग्मं सदाऽवतु।
ॐ रां ह्रीं श्रीं राधिकांगेन्तं बह्नि जायान्तमेवच।।७।।
मस्तकं केश संघाश्च मन्त्र राजः सदाऽवतु।
ॐ रां राधेति चतुर्थ्यन्तं बह्नि जायान्त मेव च।।८।।
सर्वसिद्धि प्रदः पातु कपोलं नासिका मुखम्।
क्लीं श्रीं कृष्णप्रियांगेतं कण्ठं पातु नमोऽन्तकम्।।९।।
ॐ रां रासेश्वरींगेतं स्कन्धं पातु नमोऽन्तकम्।
ॐ रां रासविलासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु।।१०।।
वृन्दावन विलासिन्यै स्वाहा वक्ष सदाऽवतु।
तुलसीवन वासिन्यै स्वाहा पातु नितम्बकम्।।११।।

कृष्णप्राणाधिकांगेतं स्वाहान्तं प्रणवादिकम्।
पादयुग्मं च सर्वांगं सततं पातु सर्वतः।।१२।।
राधा रक्षतु प्राच्यां च बह्नौ कृष्णप्रियाऽवतु।
वक्षे रासेश्वरी पातु गोपीशा नैऋतेऽवतु।।१३।।
पश्चिमे निर्गुणा पातु बायव्ये कृष्ण पूजिता।
उत्तरे सततं पातु मूल प्रकृतिरीश्वरी।।१४।।
सर्वेश्वरी सदैशान्या पातु मां सर्वपूजिता।
जले स्थले चान्तरीक्षे स्वप्ने जागरणे तथा।।१५।।
महाविष्णोश्च जननी सर्वतः पातु सन्ततम्।
कवच कथितं दुर्गे श्रीजगन्मंगलम् परम्।।१६।।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गुह्याद गुह्यतरं परम्।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।।१७।।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् वस्त्रालंकार चन्दनैः।
कण्ठे वा दक्षिणेबाहौ धृत्वा विष्णु समोभवेत्।।१८।।
शत लक्ष जपे नैव सिद्धं च कवचं भवेत्।
यदि स्यात सिद्ध कवचो न दग्धो वह्निना भवेत्।।१९।।
एतस्मात् कवचाद् दूर्गे राजा दुर्योधनः पुरा।
बिशारदो जलस्तम्भे बह्निस्तम्भे च निश्चितम्।।२०।।
मया सनत्कुमाराय पुरा दत्तं च पुष्करे।
सूर्य पर्वणि मेरौ च स सान्दीपनये ददौ।।२१।।
बलाय तेन दत्तं च ददौ दुर्योधनाय सः।
कवचस्य प्रसादेन जीवन मुक्तो भवेन्नरः।।२२।।
नित्य पठति भक्त्येदं तन्मंत्रोपासकाश्चयः।
विष्णुतुल्यो भवेन्नित्यं राजसूय फलं लभेत्।।२३।।
स्नानेन सर्वतीर्थानां सर्व दानेन यत्फलम्।
सर्व व्रतोपवासे च पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे।।२४।।
सर्वं यज्ञेषु दीक्षायां नित्यं च सत्य रक्षणो।
नित्यं श्रीकृष्ण सेवायां कृष्ण नैवेद्य भक्षणे।।२५।।

पाठे चतुर्णां वेदानां यत्फलं च लभेन्नरः।
तत्फलं लभते नूनं पठनात् कवचस्य यः।।२६।।
राजद्वारे श्मशाने च सिंह व्याघ्रान्विते बने।
दावाग्नौ संकटे चैव दस्यु चौरान्विते भये।।२७।।
कारागारे विपदगस्ते घोरे च दृढ़ बन्धने।
व्याधियुक्तो भवेन्मुक्तो धारणात् कवचस्य च।।२८।।
इत्येतत्कथितं दुर्गे तवेदं च महेश्वरी।
त्वमेव सर्वरूपा मां माया पृच्छसि मायया।।२९।।

।। श्रीनारायण उवाच।।

इत्युक्त्वा राधिकाख्यानं स्मारं स्मारं च माधवम्।
पुलकांकित सर्वांगः साश्रु नेत्र बभूव सः।।३०।।
न कृष्ण सदृसो देवो न गंगा सदृसी सरित्।
न पुष्कर समं तीर्थं नाश्रमो ब्राह्मणात् परम्।।३१।।
परमाणु परं सूक्ष्मं महाविष्णोः परो महान।
नमः परं च विस्तीर्णं यथा नास्त्येव नारदः।।३२।।
तथा न वैष्णवाद् ज्ञानी योगीन्द्रः शंकरात परः।
काम क्रोध लोभ मोहा जितास्ते नैव नारदः।।३३।।
स्वप्ने जागरणे शश्वत् कृष्ण ध्यान रतः शिवः।
यथा कृष्णस्तथा शम्भुर्नभेर्दो माधवेशयोः।।३४।।
यथा शंभुवैष्णवेषु यथा देवेषु माधवः।
तथेदं कवचं वत्स कवचेषु प्रशस्तकम्।।३५।।

इति श्रीब्रह्मवैवर्त्त पुराणे प्रकृति खण्डे ५६तम अध्याये
श्रीराधिका कवचम् सम्पूर्ण।।

नारद पांचरात्र में

ज्ञानामृतसारे श्रीराधिका कवचं

तथा

श्रीराधाया सप्तत्रिंशनाम स्तोत्रम्

नारद पांचरात्र वैष्णव सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध प्रामाणिक ग्रन्थ है। वैष्णव उपासना, सदाचार, भक्ति, वैराग्य आचार संहिता, अनुष्ठान आदि का सम्यक् प्रामाणिक ग्रन्थ है। भगवान् शंकर ने देवर्षि नारद से कहा—श्रीराधा की महिमा विलक्षण है, नवनवायमान, रहस्यमयी, अति दुर्लभ, भुक्ति मुक्ति प्रदाता, निर्मल वेद की सार रूपा अतिशय पुण्य दायिनी है। जैसे कृष्ण अजन्मा हैं वैसे ही राधा अजन्मा एवं परा शक्ति हैं। हरि के समान ही नित्य हैं। "ज्ञानामृतसारे श्रीराधिका कवचं" और "श्रीराधाया सप्तत्रिंश नामानि" का अध्ययन, स्मरण, ध्यान एवं धारण से मनुष्य कृपा प्राप्त करता है। सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। सुख, शान्ति, यश, कीर्त्ति का विस्तार होता है।

।। श्रीराधिकायै नमः।।

श्रीराधिका-कवच

।। पार्वत्युवाच।।

कैलाश-वासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक।
राधिका-कवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो।।१।।
यद्यस्ति करुणा नाथ त्राहिमां दुःखितो भयात्।
त्वमेव शरणं नाथ शूलपाणे ! पिनाकिधृक्।।२।।

।। शिव उवाच ।।

शृणुस्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्व-सूचितम्।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्व हत्या हरं परम्।।३।।
हरि भक्ति-प्रदं साक्षात् भुक्ति-मुक्ति प्रसाधनम्।
त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरि सान्निध्यकारकम्।।४।।
सर्वत्र जयदं देवि सर्व शत्रुभयापहम्।
सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्तिहरं परम्।।५।।
चतुर्धा मुक्ति-जनकं सदानन्द-करं परम्।
राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फलदायकम्।।६।।
इदं कवचमज्ञाप्त्वा राधा-मन्त्रं च यो जपेत्।
स नाप्नोति फलं तस्य विघ्नस्तस्य पदे पदे।।७।।
ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप छन्दश्च कीर्त्तितः।
राधाऽस्यदेवता प्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम्।।८।।
धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः।
श्रीराधा मे शिरः पातु ललाटं राधिका तथा।।९।।
श्रीमती नेत्र-युगलं कर्णो गोपेन्द्र-नन्दिनी।
हरिप्रिया नासिकां च भ्रू युगं शशि शोभना।।१०।।
ओष्ठं पातु कृपा देवी अधरं गोपिका तथा।
वृषभानुसुता दन्तांश्चिबुकं गोपनन्दिनी।।११।।

चन्द्रावली पातु गण्डं जिह्वां कृष्ण-प्रिया तथा।
कण्ठं पातु हरि-प्राणा हृदयं विजया तथा।।१२।।
बाहू द्वौ चन्द्र-वदना उदरं सुबल स्वसा।
कटि योगान्विता पातु पादौ सौभद्रिका तथा।।१३।।
नखांश्चन्द्रमुखी पातु गुल्फौ गोपाल वल्लभा।
जानुदेशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः।।१४।।
वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी।
पूर्वां दिशं कृष्णरता कृष्णप्राणा च पश्चिमाम्।।१५।।
उत्तरां हरिता पातु दक्षिणे वृषभानुजा।
चन्द्रावली निशामेव दिवा क्ष्वेडित मेखला।।१६।।
सौभाग्यदा मध्यदिने सायान्हे काम रूपिणी।
रौद्री प्रातः पातु मां हि गोपिनी रजनीक्षये।।१७।।
हेतुदा संगमे पातु केतुमाला दिवार्द्धके।
शेषाऽपराह्न समये शमिता सर्व सन्धिषु।।१८।।
योगिनी भोग-समये रतौ रति प्रदा सदा।
कामेशी कौतुकी नित्यं योगे रत्नावली मम।।१९।।
सर्वत्र सर्वकार्येषु राधिका कृष्ण-मानसा।
इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।।२०।।
सर्वरक्षाकर नाम महारक्षाकरं परम्।
प्रातर्मध्याह्न-समये सायाह्ने प्रपठेद्यदि।।२१।।
सर्वार्थ-सिद्धिस्तस्य स्यात् यद्यन्मनसि वर्त्तते।
राजद्वारे सभायां च संग्रामे शत्रुसंकटे।।२२।।
प्राणार्थ नाश समये यः पठेत् प्रयतो नरः।
तस्य सिद्धि भवेद्देवि न भयं विद्यते क्वचित्।।२३।।
आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः।
गंगास्नानाद्धरेर्नाम ग्रहणाद्यत्फलं लभेत्।।२४।।
तत्फलं तस्य भवति यः पठेत् प्रयतः शुचिः।
हरिद्रारोचनाचन्द्रामण्डितं हरिचन्दनम्।।२५।।

कृत्वा लिखित्वा भूर्जे च धारयेत् मस्तके भुजे।
कण्ठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशय।।२६।।
कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टिं स्थितिं हरिः।
संहारं चाहं नियतं करोमि कुरुते तथा।।२७।।
वैष्णवाय विशुद्धाय विराग गुण शालिने।
दद्यात् कवचमव्यग्रमनन्यं धर्ममाप्नुयात्।।२८।।

इति श्रीनारद पंचरात्रे
ज्ञानामृत सारे श्रीराधिका कवचं सम्पूर्णम्।।

श्रीराधायाः सप्तत्रिंशन्नाम स्तोत्रम्

राधा रासेश्वरी रम्या परमा च परात्मिका।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षःस्थलस्थिता।।१।।
कृष्ण प्राणाधिका देवी महाविष्णुप्रसूरपि।
सर्वाद्या विष्णुमाया च सत्यासत्या सनातनी।।२।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा।
वृन्दावनेशा विजया यमुना तट वासिनी।।३।।
गोपांगनानां प्रथमा गोपीशा गोपमातृका।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दन-कामिनी।।४।।
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमस्य च।
काम्या कलावतीकन्या तीर्थपूता सती शुभा।।५।।
सप्तत्रिंश्च नामानि वेदोक्तानि शुभानि च।
सारभूतानि पुण्यानि सर्व नामसु नारद।।६।।
यः पठेत् संयतः शुद्धो विष्णुभक्तो जितेन्द्रियः।
इहैव निश्चलां लक्ष्मीं लब्ध्वा याति हरेः पदम्।।७।।
स्तोत्र-स्मरणमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।
पदेपदेऽश्वमेधस्य लभते निश्चितं फलम्।।८।।
कोटि जन्मार्जितात् पापान् ब्रह्महत्या-शतादपि।
स्तोत्र-स्मरणमात्रेण मुच्यते नात्र संशयः।।९।।

इति श्रीनारद पाञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे शिव नारद संवादे
श्रीराधायाः सप्तत्रिंशनाम स्तोत्रम्।।

ब्रह्मयामल तन्त्रे

श्रीराधा कवचं

वैष्णव तन्त्रों में ब्रह्मयामल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी प्रतियाँ प्राप्त होना कष्ट साध्य है। जगन्नाथ मुक्ति मण्डप पोथीशाला, काशीराज ट्रष्ट ग्रन्थागार, राधागोविन्ददेव पोथीखाना, जयपुर एवं नेपाल नरेश ग्रन्थागार में होना सम्भव है ऐसा विद्वानों का मत है। मात्र एक प्रति ब्रह्मयामलोक्त, हरगौरी संवादे राधाकवचं बंगला लिपि में प्राप्य है। इसका पठन–पाठन, धारण अर्चन एवं ध्यान सर्वविध अमंगल को दूर करता है। श्रीवृद्धि, कृपा प्राप्ति, मनोवांछा पूर्णकारी यह कवच का अनुष्ठान कल्याणप्रद है। यह प्रचार प्राप्त नहीं है। राधा महिमा से ओत–प्रोत है एवं सरल है।

श्रीराधा कवचम्

।। श्रीपार्वत्युवाच ।।

देवदेव महादेव परम प्रीतिदायक।
श्रीराधा कवचम् देव कथय प्राणवल्लभः।।१।।

।। श्रीमहादेव उवाच ।।

साधु साधु महादेवि भद्रं भद्रं सुमंगलं।
प्रेमभावाण्वितायांश्च राधाया कवचं परं।।२।।
श्याम प्रेम विलासिन्या गोपिन्याः प्रेम सागरे।
मग्नाया कवचं देवि कथयामि शृणुष्वतत्।।३।।
ऋषिर्नारायण प्रोक्तो गायत्रीच्छन्द इत्यपि।
देवता राधिका देवि प्रेम भक्ति प्रदायका।।४।।
धमार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः।
तप्त काञ्चन गौरांगी राधा वृन्दावनेश्वरीम्।।५।।
वृषभानु सुतां देवि नमामि श्रीहरिप्रियाम्।
राधा मे हृदयं पातु, मस्तकं पातु गोपिका।।६।।
श्रीकृष्ण हृदयाशक्ता पातु नाभिं सदा मुदा।
श्रीकृष्णानन्द कलिता पातु मे पाद युग्मकम्।।७।।
गोविन्द भाव रचिता बाहुयुग्म सदावतु।
श्रीराधायै वह्निजाया सर्वांग पातु सर्वदा।।८।।
श्रीं श्रीराधायै स्वाहा पातु नित्यं षड़ाक्षरी।
श्रीं रां हीं राधायै वह्नि जायान्ते च महामनु।।९।।
अष्टाक्षरो महामन्त्र सर्व कार्येषु रक्षतु।
विष्णोर्वक्षस्थलस्था च पुत्रान् रक्षतु मे सदा।।१०।।
विष्णोर्भावेन मुदिता गुह्य पातु च सर्वदा।
दुर्गाभाव रता देवि जिह्वाग्रं मम रक्षतु।।११।।

श्याम प्रेम धृता देवि राजस्थाने सदाऽवतु।
कृष्णनिवेदितांगी च भक्तिभाव सदाऽवतु।।१२।।
कृष्णार्त्ति वर्द्धिनी देवि सर्वबन्धुसदाऽवतु।
इन्द्राद्याः सकलादेवाः पूर्वादि दिशि रक्षतु।।१३।।
रक्षां कुर्वन्तु मां नित्यं धनधान्य प्रदायिका।
इति ते कथितं भद्रे गुह्यात्गुह्यतरं परं।।१४।।
यः पठेत् साधक श्रेष्ठो भक्तियुक्त सदा भुवि।
गृहे निवसिते लक्ष्मी वाणी वक्तेन संयुतः।।१५।।
राजानो दास्यतां यान्ति देव तुल्यो भवेन्नरः।
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां परं।।१६।।
सर्वसिद्धि युतो भूत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत्।
भक्ति युक्ताय, शिष्याय साधकाय प्रकाशयेत्।।१७।।
द्विजाय भक्तिहीनाय, कदाचिन्न प्रदर्शयेत्।
श्वपचाय, सदा देयं यदि भक्तियुतो भवेत्।।१८।।
अज्ञात्वा कवचं देवि राधाकृष्ण भजेत्तुयः।
युगायुतः कृतक्लेशः प्रेमभक्तिर्न जायते।।१९।।

इति श्रीब्रह्मयामले हरगौरी संवादे
श्रीराधा कवचं सम्पूर्णम्।।

सम्मोहन तन्त्रो

त्रैलोक्य विक्रम राधा कवचम्

सम्मोहन तन्त्र वैष्णवों का मान्य ग्रन्थ है। इस तन्त्र में गोपाल सहस्रनाम स्तोत्रं, गोपाल सम्मोहन कवचं, गोपाल स्तवराज त्रैलोक्य विक्रम राधा कवचं, राधा अष्टकम् आदि वर्णित है। अन्य देव–देवी एवं आचार संहिता भी है परन्तु इस तन्त्र में "गौर तेजो विनायस्तु श्यामतेजः समर्चयेत। जपेद् वा ध्यायते वापि स भवेत् पातकी शिवे।।" इस प्रमाण को अनेक आचार्यों ने ग्रहण किया है। जीव गोस्वामी ने ब्रह्मसंहिता की टीका में राधा विषयक श्लोक इस तन्त्र से लिया है। राधागोविन्ददेव मन्दिर के सेवक विद्वान् श्रीराधाकृष्णदास जी ने साधन दीपिका में इस राधाकवच के अनुष्ठान एवं पाठ का विधान दिया है। निम्बार्क एवं गौड़ीय सम्प्रदाय में इस पाठ का प्रचलन है। सुनने में आया है कि इस तन्त्र में गोपाल सहस्रनाम की भाँति राधासहस्रनाम भी है। उसका दर्शन दुर्लभ है।

त्रैलोक्य विक्रम-राधा कवचं

श्रीपार्वत्युवाच-

यद गोपितं त्वया पूर्वं तन्त्रादौ यामलादिषु।
त्रैलोक्य विक्रमं नाम राधा कवचमद्भुतं।।१।।
तन्मह्यं ब्रूहि देवेश यद्यहं तव वल्लभा।
सर्वसिद्धि प्रदं साक्षात् साधकाभीष्ट दायकम्।।२।।

श्रीमहादेव उवाच-

शृणु प्रिये प्रवक्ष्यामि कवचं देव दुर्लभं।
यच्च कस्मिंश्चिदाख्यातुं गोपितं भुवनत्रये।।३।।
यस्य प्रसादतो देवि सर्वसिद्धीश्वरोऽस्महं।
वागीशश्च हयग्रीवो देवर्षिश्चैव नारदः।।४।।
यस्य प्रसादतो विष्णुस्त्रैलोक्य स्थिति कारकः।
ब्रह्मा यस्य प्रसादेन त्रैलोक्यं रचयेत् क्षणात्।।५।।
अहं संहार-सामर्थ्यं प्राप्तवान नात्र संशयः।
त्रैलोक्य विक्रमं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम्।।६।।
तच्छृणु त्वं महेशानि भक्ति श्रद्धा समन्विता।
त्रैलोक्य विक्रमस्यास्य कवचस्य ऋषिर्हरिः।।७।।
छन्दोऽनुष्टुप देवता च राधिका वृषभानुजा।
श्रीकृष्ण प्रीति-सिद्धयर्थे विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।८।।
राधिका पातु मे शीर्षं वृषभानुसुता शिखां।
भालं पातु सदा गोपी नेत्रे गोविन्द वल्लभा।।९।।
नाशां रक्षतु घोषेशी ब्रजेशी पातु कर्णयोः।
गण्डौ पातु रति क्रीड़ा ओष्ठौ रक्षतु गोपिका।।१०।।
दन्तान रक्षतु गान्धर्वी जिह्वां रक्षतु भामिनी।
ग्रीवांकीर्त्ति सुता पातु मुखवृत्तं हरिप्रिया।।११।।

वाहु मे पातु गोपेशी पादौ मे गोपसुन्दरी।
दक्ष पार्श्वे सदा पातु कुंजेश्वरी राधिके।।१२।।
वाम पार्श्वे सदा पातु रासकेलि विनोदिनी।
संकेतस्था पातु पृष्ठ नाभिं वनविहारिणी।।१३।।
उदरं नवतारुण्या वक्षो मे व्रजसुन्दरी।
अंशद्वयं सदा पातु परकीया रसप्रदा।।१४।।
ककुदं पातु गोपाली सर्वांगं गोकुलेश्वरी।
चन्द्रानना पातु गुह्यं राधा सर्वांग सुन्दरी।।१५।।
मूलाधारं सदा पातु श्रीं क्लीं सौभाग्यवर्द्धिनी।
ऐं क्लीं श्रीं राधिके स्वाहा स्वाधिष्ठानं सदावतु।।१६।।
क्लां[1] क्लीं नमो राधिकायै मणिपुरं सदावतु।
लक्ष्मी माया स्मरो राधा पातु चित्तमनाहतं।।१७।।
क्लीं क्लीं कामकला राधा विशुद्धं सर्वदावतु।
आज्ञां[2] रक्षतु मे राधा हंसः क्लीं वह्निवल्लभा।।१८।।
ॐ नमो राधिकायै स्वाहा सहस्रारं सदावतु।
अष्टादशाक्षरी राधा सर्वदेशे तु पातु मां।।१९।।
नवार्णा पातु मां उर्द्धे दशार्णावतु संसदि।
एकादशाक्षरी पातु द्यूते वाद विवादयोः।।२०।।
सर्वकाले सर्वदेशे द्वादशार्णा सदावतु।
पंचाक्षरी राधिकेशी वासरे पातु सर्वदा।।२१।।
अष्टाक्षरी च राधा मां रात्रौ रक्षतु सर्वदा।
पूर्णा पञ्चदशी राधा पातु मां व्रजमण्डले।।२२।।
इत्येवं राधिकायास्तु कवचं कीर्त्तितं मया।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।।२३।।
न देयं यस्य कस्यापि महासिद्धि प्रदायकं।
अभक्त्यापि पुत्राय दत्वा मृत्युं लभेन्नरः।।२४।।
नातः परतरं दिव्यं कवच भुवि विद्यते।
पठित्वा कवचं पश्चाद्युगलं पूजयेन्नरः।।२५।।

सनत्कुमार संहितायां

श्रीराधास्तोत्रम्

यह स्तोत्र राधा महिमा प्रतिपादक, भक्तों के हृदय में आनन्द संचार करने वाली, कृष्ण प्रेम एवं करुणा प्रदान करने वाली हैं। इस स्तोत्र के पाठ से राधाकृष्ण युगल एवं धाम वास सुलभ हो जाता है। निम्बार्क एवं गौड़ीय सम्प्रदाय में इसके पाठ को महत्त्व दिया गया है। सनत्कुमार संहिता में कृष्ण और राधिका की अभिन्नता स्थापित की गई है। इस संहिता का प्रमाण आचार्य पादों ने अपनी व्याख्या में यत्र–तत्र उट्टंकित किया है।

पुष्पाञ्जलिं ततो दत्त्वा राधा सायुज्यमाप्नुयात्।[३]
अष्टोत्तर शतञ्चास्य पुरश्चर्या प्रकीर्त्तिता।।२६।।
अष्टोत्तर शतं जप्त्वा साक्षाद्देवो भवेत् स्वयं।
कृष्णप्रेममवाप्याशु दुर्लभं लभते ध्रुवम्।।२७।।

इति श्रीसम्मोहन तन्त्रे श्रीराधायास्त्रैलोक्य विक्रम नाम कवचं सम्पूर्णम्।।

पाठ भेदाः–
१ क्लीं श्रीं नमो
२ आत्मा
३ राधा सान्निध्य माप्नुयात्।

श्रीराधास्तोत्रम्

राधे राधे च कृष्णेशे कृष्ण प्राण मनोहरे।
भक्तधाम प्रदे देवि राधिके त्वं प्रसीद मे।।१।।
रहःकेलि सुखस्थाने सखीप्रेमकरेऽनघे।
कृष्णोत्कर्षकरे नित्यं राधिके त्वं प्रसीद मे।।२।।
भक्तानानन्द संदोहोवर्द्धिनि जेष्ठचिन्तने।
कोटिचन्द्रार्क संहर्त्री राधिके त्वं प्रसीद मे।।३।।
गौरांगी नीलाम्बरधरे कृष्णप्रेमाब्धि धारिणि।
पीताम्बर प्रदे कृष्णे राधिके त्वं प्रसीद मे।।४।।
किरीट केयूर धरे नूपुराभात पादुके।
बहुभूषणसंयुक्ते राधिके त्वं प्रसीद मे।।५।।
इति गदितमनाद्यं राधिका स्तोत्रमाद्यम्।
सुरनरगण मुख्यैर्नागगन्धर्वसाध्यैः।।६।।
पठतिमपि रहस्यं साधुभिश्चैकवारम्।
नयति परमदिव्ये धाम्नि कृष्णः स्वभक्तान्।।७।।

इति श्रीसनत्कुमार संहितायां श्रीराधा स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

ऊर्ध्वाम्नाय तन्त्रोक्त

राधिका अष्टोत्तर शतनाम एवं राधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र

वैष्णव तन्त्रों में उर्द्धाम्नाय तन्त्र का एक विशिष्ट स्थान है। इसमें महादेव द्वारा राधा एवं कृष्ण के विशिष्ट गुणों का कीर्त्तन करते हुए स्तोत्र आदि का वर्णन है। इसी क्रम में राधिका अष्टोत्तर शतनाम एवं राधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र प्रसिद्ध है। साधन दीपिकाकार राधाकृष्णदास गोस्वामी, राधा साधन का एक प्रधान अंग मानते हैं। जो राधाकुण्ड में नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर विशुद्ध भाव से कृपा–कटाक्ष का पाठ करेगा, उसे राधारानी जल में दर्शन देंगी। बहुतों को स्वप्न में भी आभास प्राप्त हुआ है। यह प्रासादिक स्तोत्र है, इसका पठन–पाठन निम्बार्क एवं गौड़ीय सम्प्रदाय तथा अन्य साधकों में इसका अनुष्ठान भी प्रचलन में है। इसकी टीका भी लिखी गई है और विभिन्न रूप में प्रकाशित है। बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण भारत, गुजरात के कुछ अंश, उ० प्र० में वैष्णव जोकि कृष्ण उपासक हैं, वे नित्यपाठ करते हैं। अंग्रेजी में भी अनुवाद उपलब्ध होता है।

श्रीराधिका-अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं

ईश्वर उवाच-

अथास्यां संप्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
यस्य संकीर्त्तनादेव श्रीकृष्ण वशयेद् ध्रुवम्।।१।।
राधिका सुन्दरी गोपी कृष्ण संगमकारिणी।
चंचलाक्षी कुरंगाक्षी गान्धर्वी वृषभानुजा।।२।।
वीणापाणिः स्मितमुखी रक्ताशोकलतालया।
गोवर्द्धनचरी गोप्या गोपीवेश-मनोहरा।।३।।
चन्द्रावली-सपत्नी च दर्पणास्या कलावती।
कृपावती सुप्रतीका तरुणी हृदयंगमी।।४।।
कृष्णप्रिया कृष्णसखी विपरीत रतिप्रिया।
प्रवीणा सुरतप्रीता चन्द्रास्या चारुविग्रहा।।५।।
केकराक्षी हरेः कान्ता महालक्ष्मी सुकेलिनी।
संकेतवट-संस्थाना कमनीया कामिनी।।६।।
वृषभानुसुता राधा किशोरी ललितालता।
विद्युद्वल्ली काञ्चनाभा कुमारी मुग्धवेशिनी।।७।।
केशिनी केशवसखी नवनीतैक विक्रया।
षोड़शाब्दा कलापूर्णा जारिणी जारसंगिनी।।८।।
हर्षिणी वर्षिणी वीरा धीरा धीरा धराधृतिः।
यौवनस्था वनस्था च मधुरा मधुराकृतिः।।९।।
वृषभानुपुरावासा मानलीला विशारदा।
दानलीलादानदात्री दण्डहस्ता भ्रुवोन्नता।।१०।।
सुस्तनी मधुरास्या च विम्बोष्ठी पंचमस्वरा।
संगीतकुशला सेव्या कृष्णवश्यत्व-कारिणी।।११।।

तारिणी हारिणी ह्रीला शीलालीलाललामिका।
गोपाली दधिविक्रेत्री प्रौढ़ा मुग्धा च मध्यका।।१२।।
स्वाधीनपतिका चोक्ता खण्डिता चाभिसारिका।
रसिका रसिनी रस्या रसशास्त्रैकसेवधिः।।१३।।
पालिका लालिका लज्जा लालसा ललनामणिः।
बहुरूपा सुरूपा च सुप्रसन्ना महामतिः।।१४।।
मरालगमना मत्ता मन्त्रिणी मन्त्रनायिका।
मन्त्रराजैक-संसेव्या मन्त्रराजैक सिद्धिदा।।१५।।
अष्टादशाक्षरफला अष्टाक्षर-निसेविता।
इत्येतद् राधिकादेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।१६।।
कीर्त्तयेत् प्रातरुत्थाय कृष्ण वश्यत्व सिद्धये।
एकैक नामोच्चारेण वशी भवति केशवः।।१७।।

इति ऊर्ध्वाम्नाय तन्त्रे
राधिका अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

ऊर्ध्वाम्नाय तन्त्रे

श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्रम्

महादेवोवाच-

मुनीन्द्र-वृन्द-वन्दिते त्रिलोक-शोक-हारिणी
प्रसन्न-वक्त्र-पंकजे निकुंज-भू-विलासिनी।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनु-संगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।१।।
अशोक-वृक्ष-वल्लरी वितान-मण्डप-स्थिते
प्रवालबाल-पल्लव प्रभारुणांघ्रि-कोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।२।।
अनंग - रंग - मंगल - प्रसंग - भंगुरभ्रुवां
सविभ्रमं ससंभ्रमं दृगन्त-बाणपातनैः।
निरन्तरं वशीकृतप्रतीतनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।३।।
तडित्-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे
मुख-प्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दुमण्डले।
विचित्र-चित्र-संचरच्चकोर-शाव-लोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।४।।
मदोन्मदाति-यौवने प्रमोद-मान-मण्डिते
प्रियानुराग रंजिते कला-विलास-पण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराज्यकामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।५।।

अशेष - हाव - भाव - धीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भ-कुम्भकुम्भिकुम्भसुस्तनि।
प्रशस्तमन्दहास्यचूर्ण - पूर्ण - सौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।६।।
मृणाल-वाल - वल्लरी - तरंग - रंग-दोर्लते
लताग्र-लास्य-लोल-नील-लोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ-मुग्ध-मोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।७।।
सुवर्णमालिकाञ्चिते-त्रिरेख-कम्बु-कण्ठगे
त्रिसूत्र-मंगलीगुण-त्रिरत्नदीप्ति-दीधिति।
सलोल-नीलकुन्तल-प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।८।।
नितम्ब-बिम्ब-लम्बमान-पुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्न-किंकिणी-कलाप-मध्यमञ्जुले।
करीन्द्र-शुण्डदण्डिका-वरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।९।।
अनेक-मन्त्रनाद-मञ्जुनूपुरारवस्खलत्
समाज-राजहंस-वंश-निक्वणातिगौरवे।
विलोलहेम-वल्लरीविडम्बिचारु-चंक्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।१०।।
अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्र-पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा-पुलोमजा-विरिंचिजा-वरप्रदे।
अपार-सिद्धि-ऋद्धि-दिग्ध-सत्पदांगुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।११।।
मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद-काननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते।।१२।।

फलश्रुति–

इतीदमद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोति संततं जनं कृपाकटाक्ष-भाजनम्।।१३।।
भवेत्तदैव संचित त्रिरूप-कर्म नाशनं।
लभेत्तदा व्रजेन्द्र-सूनु-मण्डल-प्रवेशनम्।।१४।।
राकायां च सितष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धधीः।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः।।१५।।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिःस्यात् प्रेमलक्षणा।।१६।।
ऊरुमात्रे नाभिमात्रे हृन्मात्रेकण्ठमात्रके।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत् साधकः शतम्।।१७।।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वांछितार्थ फलं लभेत्
ऐश्वर्यं च लभेत् साक्षाद्दृश्या पश्यति राधिकाम्।।१८।।
तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम्।
येन पश्यति नेत्राभ्यां तत् प्रियं श्यामसुन्दरम्।।१९।।
नित्यलीला-प्रवेशं च ददाति श्री व्रजाधिपः।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते।।२०।।

इति श्रीऊर्धाम्नायतन्त्रे शिवगौरी संवादे
श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

गौतमीय तन्त्रे

राधिका–स्तवराज

वैष्णव तन्त्रों में गौतमीय तन्त्र का एक प्रधान स्थान है। इसमें राधा एवं कृष्ण की महिमा को समान रूप से दर्शाया गया है। राधा श्रीयुक्ता, अशेष गुण शालिनी, स्वर्णकान्ति, वेदगुह्या कृष्ण बल्लभा हैं। उनके स्तव, आराधना पूजा से भगवान् कृष्ण कृपा करते हैं। युगल के माधुर्यरस में सिक्त कर देते हैं। इस तन्त्र में रूप, गुण, निकुंजलीला एवं धामतत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

श्रीराधिका-स्तवराज

श्रीराधिकायै नमः

ध्यात्वा वृन्दावने रम्ये यमुनातीर संगतम्।
कल्पवृक्ष समाश्रित्य तिष्ठन्तं राधिका युतम्।।१।।
ध्यायेत्ततः पठेदिमं स्तवराज कृति पुमान्।
यस्योच्चारण मात्रेण प्रसीदति वरेश्वरी।।२।।
धन्या नीलाम्बरी श्यामा गौरवर्णा वरांगणा।
वेदगुह्या गुणातीता राधाकृष्ण समन्विता।।३।।
मोहिनी सुन्दरी बाला रसरूपा हरिप्रिया।
श्रीकृष्ण बल्लभा राधा पुरुषोत्तम धीमता।।४।।
तरुणी करुणा रक्ता अलंकार-जितोपमा।
निर्भया कोमला सीता चन्द्रकोटि निभानना।।५।।
नूपुरा सहिता पद्मा पाद युग्ममनूपमा।
केलि गर्भ समा जंघा नितंविनी मनोरमा।।६।।
नीलाम्बर परिधाना किंकिणी कटि मेखला।
कृशोदरी चातिनम्रा गोपपत्नी नमस्कृता।।७।।
त्रिवलीनाभिगंभीरा पीनतुंग पयोधरा।
कस्तूरी मलयालिप्ता चर्चितावर्त्तुलस्तना।।८।।
रत्नमुक्तामणिमाला कंचुकी परिरंजिता।
नानारत्नमयी ग्रीवा शोभिता ब्रजमण्डली।।९।।
द्विभुजा सर्वदा शुभ्रा शीतला वरदा सदा।
कमला अंगदा सौम्या कंकणै परि संगता।।१०।।
मुद्रिकांगुलियुक्ता च कोमलापाद श्री करा।
अमिता अमृता पुण्या किशोरी कमलानना।।११।।

माधुरी सरसि वाचा बिम्बोष्ठी कृष्णचुम्बिता।
हसिता लसिता नम्रा नाशामुक्ता मनोहरा।।१२।।
चंचला चपला स्नेहा मदघूर्णित लोचना।
स्वामिनी सुमुखी चन्द्रा भाले तिलक निर्मिता।।१३।।
सिन्दूर कुंकुमारंगा विन्दुकी परिरंजिता।
वनशोभाकरी धौता कर्णे कनक कुण्डली।।१४।।
स्वर्णावरचितारत्ना शिरोमणि विराजिता।
श्रुतिमणिगणारामा सुकेशीवेणि बन्धना।।१५।।
सर्वाभरण शोभाढ्या नानारत्नपशोभिता।
आपाद केशपर्यन्ता दृश्यति लज्जती रमा।।१६।।
नेति नेति चतुर्वेदाः कुर्वन्ति श्रुतिगोचरा।
निजवनस्य मध्यस्था राधिका कृष्णतल्पगा।।१७।।
पयःफेननिभारौप्या कृष्णभोग्या ब्रजांगना।
मैथुनीचातुरी श्यामा विपरीत रति प्रदा।।१८।।
दामिनी मेघसंयुक्ता प्रकाशा ब्रजमण्डली।
श्रुता कृष्णयुताऽऽश्लिष्टा उदिताचन्द्रमण्डली।।१९।।
सुगन्धवासितादेहा सुरभिपुष्पसंयुता।
लोपिता कुलमर्यादा रासकेलिपराक्रमा।।२०।।
स्वप्नकाम महातेजा ब्रह्मरूप धराधरा।
मन आकर्षिणी भामा आनन्दा कृष्ण सेविता।।२१।।
स्वरूपा सुभगा गोप्या रासमण्डल संस्थिता।
तेजस्विनी परा गौरी भामिनी भोगदायिका।।२२।।
पुरी मार्ग स्थिता नित्या पादांगुलि प्रकाशिका।
तरुणी रूप सम्पन्ना सुधासिन्धु रसायिनी।।२३।।
गोपिका नायिका कन्या कौमारी नव यौवना।
स्वरूपा हेमवर्णाभा ब्रजभूषण भूषिता।।२४।।
उर्जिता वेदमर्यादा निर्मला तनुगर्विता।
आभीर नागरी कन्या कामिनी कृष्ण योषिता।।२५।।

गति स्तम्भकरी रम्भा आनन्दा रसदायिका।
राधिका मुदिता ज्योत्स्ना कृष्णकेलि स्थिरासना।।२६।।
बल्लवीवनिता मुख्या गोपिका सुखदायिका।
प्रणुता प्रेरिता रम्या रमिता गुण सागरा।।२७।।
मातंगिनी महामन्त्रमधुपान परायणा।
वृषभानु सुता राधा दयिता कृष्णजल्पिता।।२८।।
अमोघा प्रियवादिन्या मंगला मंगल प्रिया।
सुमहा सत्यवादिन्या सखीभिः परिवारिता।।२९।।
कृष्ण-नाम-सदा-ध्येया कृष्ण-नाम-श्रुतारता।
कृष्ण-नाम-सदा-वक्त्रा कृष्ण-नाम-हृदिस्थिता।।३०।।
वनेचरी वरप्रदा मदपूर्णा सुवल्लभा।
गेहिनी त्वरिता रम्या कृष्णयोग्या मनोरमा।।३१।।
मनस्विनी कृपा-कर्त्री कलगीतनिनर्त्तकी।
वन्दिता स्तुविता नम्या पूजिता फलदेवता।।३२।।
दध्योदन सुधा भोज्या कृष्णदर्शन लालसा।
न वेदश्रुति विज्ञेया ब्रह्मादि शक्रवांछिता।।३३।।
परस्पर कृतानन्दा कमला विस्मिताननना।
नखांकित कृतादेहा सावित्री संभ्रमोपमा।।३४।।
अंगदा सुखदा सीमा हेमवल्ली वनोपमा।
ताम्बूलचर्चिता रत्ना सम्पुटा सन्मुखोन्मुखा।।३५।।
पठिता कृष्ण सन्तुष्टा हर्षिता वृषभानुजा।
राधिका राधिता राधा राधिका कृष्ण देवता।।३६।।

इति गौतमीयतन्त्रे श्रीराधिका स्तवराजः सम्पूर्णः।।

ब्रह्मजामले

राधाया विरूपाक्ष स्तुतिः

ब्रह्मयामल या ब्रह्मजामल एक ही शब्द है। वैष्णव तन्त्रों में इसका महत्त्व अधिक है। इसकी प्रतियाँ प्राप्त होना कष्टसाध्य है। जगन्नाथ मुक्तिमण्डल पोथीशाला, काशीराज ट्रष्ट ग्रन्थागार, रामनगर राधागोविन्ददेव पोथीखाना, जयपुर, नेपाल नरेश ग्रन्थागार आदि में प्राचीन प्रतियाँ हैं ऐसा सुधी समाज का मत है। राधा विरूपाक्ष स्तुति की एक प्रति संस्थान में सुलभ है। विरूपाक्ष ने श्रीराधाजी को सर्वनियन्ता आद्याप्रकृति, सर्वेश्वरी आदि कहकर स्तुति की, उनसे सदा दास्य एवं किंकरी रूप में सेवा प्रार्थना की। नखशिख लावण्य, दिव्य स्वरूप का वर्णन, उनसे बार–बार चरण सेवा एवं स्व–महिमा का ज्ञान कराने के लिए काकूतिपूर्ण प्रार्थना है। यह स्तुति बहु प्रचारित नहीं है, प्रार्थनात्मक है और राधा उपासकों के लिए उपादेय है।

श्रीराधाया विरूपाक्ष स्तुतिः

श्रीविरूपाक्ष उवाच-

ब्रह्मादय स्तुति शतै भुवितामवेद्यां,
जानन्ति नो ललित कांचन सौम्यरूपां।
स्तौमिति किं जड़मतिः सकलैक कीर्त्ति,
राधे ! प्रसीद परमेश्वरी तन्नमस्ते।।१।।
केत्वां स्तुवन्ति महन्ती न नृणां सुराणां,
वाचस्तनोश्च मनसोऽविदितां श्रुतिनां।
इत्थं कथं सकल मंगल केलि पूर्णे,
स्तौमि प्रसन्न वदने सततं नमस्ते।।२।।
आकाशवारि धरनी मरुतो महच्च,
विद्यागुण त्रितय कालजयो वयश्च।
सर्वे तवैव परमेश्वर बल्लभेते,
लीला स्वमेव शरणं कृपयाभिषिंच।।३।।
पद्मा त्वदंश जनिता तनुतेति सौख्यं,
सा किंकरी सुरधुनी तनुते च मोक्षम्।
दासी च सा जगदिदं हरति प्रसूते,
दुर्गा सदा तव कथामृत पान मुख्या।।४।।
महा विष्णुः साक्षान्नतव चरणौ द्रष्टुममितः,
क्षमोभूदद्यापि स्वयमपि महाशम्भुरचलः।
न जानीते नूनं सुमुखी भवति स्तौमि कीरति,
प्रसन्ने दासीत्वं मयि वितर कृष्णप्रियतमे।।५।।
त्वमेका लोकानां परम परमानन्द चपले,
गतिर्द्धात्री सृष्टि स्थितिलयकरी कौतुकमयी।
कथं स्तौमितीरं न खलु विवुधास्तेऽपिभवती,
विदन्ति श्रीविद्याहरिहर विरिंचि प्रभृतयः।।६।।

त्वमाराध्य प्रणय रुचिरां दिव्य दिव्यातिरूपां,
विष्णु विष्णुर्विधिरपि विधि शंकरः शंकरोभूत।
अन्ये येवा प्रमित चरितास्तेऽपि तेषां महान्तः,
सत्यं सत्यं तव चरणयोर्भावुका स्वप्रसादात्।।७।।
इत्थं के त्वामखिल जगती नाथ कान्ते,
स्तुवन्तस्त्राहित्राहि क्षणमपि कृपालेशेन सिंच।
मातुर्दास्यं तव चरणयोरेतु नित्यं,
मनो मे श्रीराधे ! सकल शुभदे किंकरी मां प्रसीद।।८।।
लक्ष्मी दृप्ता न खलु भवति कदापि दुःखं सुभद्रे,
राधे दुर्गायदि च विमुखी नास्ति हानि कदाचित्।
कालो हिंसा नहि च तनुते दुर्गतिं कृष्णकान्ते,
प्रेमानन्दाकृति सुमधुरे त्वं यदिस्याः प्रसन्ना।।९।।
रूपंनितान्त कमनीय मे तज्जातः सुनित्यं नव कांचनाभाम्।
नाना सुवेशं तव सर्वदा मे, चिन्ते सुभद्रे सुरत प्रसन्ने।।१०।।
रासोत्सव विलासिन्यै नमस्ते परमेश्वरी
कृष्ण प्राणाधिके राधे परमानन्द विग्रहे।।११।।
प्रणमामि सदा नित्यमयि त्वामति सुन्दरी।
रत्नालंकृत शोभाढ्यं कुसुमाञ्चित विग्रहाम्।।१२।।
शिखिपिच्छ लसच्चूड़ां स्निग्धकुंचित कुन्तलां।
प्रणमामि सदा राधां माजानु बनमालिनीम्।।१३।।
प्रणमामि परानन्दे प्रणमामि परेश्वरीम्।
नानागुणमयी राधां प्रणमामि पराकृतिं।।१४।।
आलोलवदनाम् नित्यमालोल कर पल्लवाम्।
प्रणमामि कवणद्रजोदालोल चरणाम्बुजाम्।।१५।।
सूत्रैर्मणिमयैः शोणैः बद्धकेशां सुवेशिनीम्।
प्रणमामि सदा राधां सुधांशु मधुराननाम्।।१६।।
रत्नाभरण सम्पूर्णां स्फुरत्कैशोर शीतलाम्।
प्रणमामि सदा राधां कौषेय बसनोज्वलाम्।।१७।।

माणिक्य दशनादिव्यं बद्ध रुक रुचिराधराम्।
प्रणमामि सदा राधां शीतांसु सदृशाननाम्।।१८।।
दलिताञ्जन सुस्निग्धां शीतलारुण लोचनाम्।
प्रणमामि सदा राधां मुक्ताकलित नाशिकाम्।।१९।।
सर्वलोक विधात्री तां जयिनां प्रभवां पराम्।
नखचन्द्र महोदीप्तां श्रीराधां प्रणमाम्यहम्।।२०।।
भुजोपरि लसत् शोभां मकराकृतिकुण्डलाम्।
अपांगेन तमोहन्त्री परमानन्द बल्लभाम्।।२१।।
लसत्कचलता दीप्तां सुस्वनांगद मुद्रिकाम्।
प्रणमामि सदा राधां हृदि राजित कौस्तुभाम्।।२२।।
जघनाबद्ध हेमादि कांचि मौक्षर्य्य सुश्रुवाम्।
प्रणमामि सदा राधां मञ्जीर चरणोज्वलाम्।।२३।।
स्फुरत्सर्वांग शोभाढ्यां गोपी मण्डल मण्डिताम्।
मण्डलालंकृता राधा पूर्णानन्दां नमाम्यहम्।।२४।।
भेरी मूरजतालादि वंशी निःसून संकुलाम्।
महाभाग्यमयी नित्यां श्रीराधां प्रणमाम्यहम्।।२५।।
मातुर्दासी शिशुमतिहरां वृत्तिमन्यां न जाने,
त्वमेकर्त्तित्वमसि च गति स्वधन त्वहि बंधुः।
सिद्धिस्तं मे तव चरणयोः सेवनं तत्समीपे,
दासी त्वं तत्प्रणय रुचिरे देहि देहिति देहि।।२६।।
ते वै चरित्र जलधौ मकरो मनो मे,
मग्नः सुखी भवतु निश्चल चेष्टमेव।
सर्वक्षणं त्वयि नतिं प्रकरोतु मूर्द्धा,
कर्णं शृणोति चरितं वदनं शृणतु।।२७।।
चित्तं विभावयतु रूपमनन्तलीलम्।
सर्वेश्वरी प्रतिजनौ मयि देहि दास्यम्।।२८।।

इति श्रीब्रह्मजामले श्रीराधाया विरूपाक्ष स्तुति समाप्तं।।

सनत्कुमार तन्त्रे

राधासहस्रनाम स्तोत्रम्

तन्त्र शास्त्र में सनत्कुमार तन्त्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राधाकृष्ण, सीताराम, हरगौरी, विष्णु के दश अवतारों की स्तुति, महिमा आदि का वर्णन किया गया है। राधाकृष्ण के स्तव, कवच आदि की शृंखला में यह राधासहस्रनाम अप्रकाशित तथा अल्पज्ञात हैं। शंकर पार्वती संवाद में राधा महिमा सूचक सहस्रनाम वर्णन प्रसंग में, सदाशिव कहते हैं कि यह स्तोत्र महापुण्य एवं प्रतापशाली है, सभी कार्य को सिद्ध करती है। भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर दायें बाहु में धारण करे। ऐश्वर्य, सुख, शान्ति, भोग, मोक्ष सभी लभ्य होता है। अलग–अलग कामनाओं के लिए पृथक् विधान दिया गया है। यह प्रति बंगला लिपि में, मात्र एक प्रति संस्थान में है। मैंने पाठ उतारकर कई प्राचीन पुस्तकालयों में सन्धान करवाया परन्तु निराशा ही हाथ लगी।

श्रीराधिका सहस्रनाम स्तोत्रम्

।। श्रीश्रीवृन्दावनैश्वर्यै नमः।।

कैलाश शिखरासीनं महादेव सदाशिवम्।
भवानी रहसि प्रीत्या पप्रच्छ वरदायकम्।।१।।

श्रीदेव्युवाच-

कथमीशान सर्वांग लोकानां हितकाम्यया।
येन नाम्ना च निस्तारन्मुच्यते मानवो भुवि।।२।।

श्रीसदाशिवोऽवाच-

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि राधानाम सहस्रकम्।
विना पूजोपहारेण विना ध्यानेन यत् फलम्।।३।।
विना जपं विनान्यासं च पर्यटनेनवा।
विना गन्धं विना पुष्पं विना धूपेन यत्फलम्।।४।।
तत्फलं शृणु देवेसि कथयामि तवाग्रतः।
रासेश्वरी प्राणविद्यामधुना राधिकेश्वरीम्।।५।।
श्रूयतां सावधानेन स्तोत्रं नाम सहस्रकम्।
कथयामि तव प्रीत्या न प्रकाश्यमिदं महत्।।६।।
न दद्यात् पर शिष्येभ्यो दद्यात् शिष्ये तपस्विने।
एतत स्तोत्रं जगत्सारं वदामि तव कारणे।।
श्रूयतां परमादेवि पुर सिद्धि प्रदायिनी।।७।।

अस्य श्रीराधिकेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्रस्य श्रीराधिका देवता, त्रिवर्ग सिद्धये विनियोगः।। आद्याशक्तिर्भगवति राधिकादेव्याः सर्व समृद्धि सिद्धये विनियोगः।।

राधिका परमेशानी वृन्दावन निवासिनिः।
सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वसिद्धिफलप्रदाः।।८।।
सर्वाधारमयी देवी सर्व सम्पद प्रदा शुभाः।
गोपीनि गोपमाता च गोलोकेश प्रदर्शिनी।।९।।

लोकमाता लोककर्त्तृ लोकमोक्ष प्रदायिनी।
लीला हेला तथा क्रीड़ा सा राधा परिकीर्त्तिताः।।१०।।
ललिता वैष्णवी चैव राधिका रासवासिनी।
वाणी भगवति गोपी गोपमाता सनातनी।।११।।
दयावती च सावित्री किशोरी कामिनी तथा।
गौरांगी गौररूपा च गौरकान्ति मनोरमाः।।१२।।
कौवेरी यामिनी घोरा घोर रूपाति श्यामला।
घनालया घनग्रीवा घनमाता च घूर्णिताः।।१३।।
शान्ति विलासिनी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिनी।
चित्रांगना चित्ररूपा द्रींकारा वह्निवासिनीः।।१४।।
द्रींकार वर्ण सारंगी द्रींकाराति मनोहरा।
गंगाधरा च मातंगी कामिनी कुण्डलोज्वलाः।।१५।।
निद्रासिनि च कामेशी मदमन्थर मन्थरा।
विरोधिनी वीरमाता वीराच्र्चा वा सदाकुलाः।।१६।।
मेघवती च कामेसि गौररूपा विलासिनी।
विश्वमाता गौरदेहा सामवेद उदाहृताः।।१७।।
यजुर्वेदधात्री च त्वं वेदालय वासिनी।
अथर्ववेदमाता च गायत्री परमेश्वरी।।१८।।
राधिका परमेशानी सुन्दरी वृन्दवासिनीः।
भवभीतिहरा मैत्री मातृका शुभदायिनी।।१९।।
शुभाशुभा च भूता च कामाक्षा कुलपालिका।
कुलमार्ग प्रधाना च कुमारी कुलसुन्दरी।।२०।।
कुलाचारा प्रसन्ना सा स्मेरहाराऽतिहारिणी।
सुधासिन्धुवलाका च गंगा च विनमावती।।२१।।
वैरोचिनी च वागेशी पुण्यदा शुभदायिनी।
विकारा अधिकारा च निश्वना घोर नादिनी।।२२।।
गंगा काशी च वाराही नारसिंहि महोत्कचाः।
शठावाला च धात्री च विधात्री वृन्दवासिनी।।२३।।

रम्भा विज्ञा च सावित्री कान्तालोक स्वरूपिनी।
भेषजि चैव विज्ञा च शंकिनी कुल सुन्दरी।।२४।।
पूर्णा पूर्णा च विज्ञा च विरिक्त सुर सेविताः।
पट्टाम्बर विभूषा च पट्टहासा सुनासिकाः।।२५।।
ऐक्षरी राधिकादेवि वृन्दावन विलासिनी।
रागमार्ग प्रदीपा च रासमण्डल मध्यगा।।२६।।
प्रेम प्रीता च प्रेमा च प्रेम संगम कारिणी।
अखण्ड मण्डलाकारा खण्डभूमि निवासिनीः।।२७।।
खण्डेश्वरी खण्डकारी खण्डहारि च खण्डनाः।
उर्वि गुर्वी गुर्रोजाया गुरु भूषण भूषणाः।।२८।।
वाला वाला सुवाला च निर्वाला वालिका तथा।
कुलिना, सुकुलीना च कुल भूषण भूषणाः।।२९।।
कुमारी कोमलकान्ता कान्तप्रेम स्वरूपिनी।
अभय भयदात्रि च भयदुर्गं विनासिनी।।३०।।
कुण्डला काण्डका चैव त्रिकुटा कुण्डकेश्वरीः।
मेधा सुमेधा सा राधा प्रचण्डा चण्डवोधिकाः।।३१।।
वृन्दावनेश्वरी वृन्दरूपा वृन्दावन कृतालयाः।
वृन्दमध्ये सदाक्रीड़ा वृन्दावन-लय वासिनी।।३२।।
मनोज्ञा माधवी तीक्ष्णा भिक्ष्ण दुर्गति तिक्ष्णीकाः।
धीर्मालिनी च वैद्या च कौषिकी कार्तिकी तथा।।३३।।
जयिनी गजिनी शीला सुन्दरी मुकुटोज्वला।
ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या शूद्रा च गोपिनी तथा।।३४।।
अश्विनी, कीर्त्तिका, पुष्या, रेवती विजया जया।
कमला, सिंहिनी तीव्रा, तीव्र वेग तपस्विनी।।३५।।
पद्मिनी चास्मिनी मेधा अस्मारूढ़ा वरप्रदा।
चन्द्रवारा च चन्द्रा च चन्द्रजा माल भूषणाः।।३६।।
चन्द्रेश्वरी चन्द्रकारि चन्द्रसारा च चन्द्रिकाः।
मैनावती च रूपेसि रूपेश्वर स्वरूपिनी।।३७।।

अपर्णा वनमाली च मैनावती सदाशिवाः।
विज्ञा, अविज्ञा, निविज्ञा सा विज्ञा विज्ञपूजिताः।।३८।।
विश्वेश्वरी, विज्ञमाता, विज्ञानालय वासिनी।
सीता सीत स्वरूपा च सुरतेज समुद्भवाः।।३९।।
सुरतेजोद्भवा क्लिन्ना भंगिमा मानिनीश्वराः।
सुरतेजो शुकादीप्ता कोटि सूर्य प्रकाशिनी।।४०।।
कोटि सूर्योज्वला नारि श्रीमति सुरनन्दिनी।
मानिनि मान्य भूषाढ्या माल्य सन्तोष कारिणी।।४१।।
मंगला मंगली कीर्त्ति विकीर्त्ति वरदा शुभाः।
सुनादा नारद सेव्या सा राधा परिकीर्त्तिताः।।४२।।
कौतुहली च कौमारि कुमार्यार्च्चन वन्दिताः।
कोटि सूर्येन्दु कान्ताढ्या कोटि सूर्य समुज्वलाः।।४३।।
मज्या ज्येष्ठाकात्तुरा च फलदात्रि फलालिका।
पद्मिनी शंखिनी चैव शंखवेला च सेविताः।।४४।।
इन्द्र तुल्य च इन्द्रा च इन्द्र पूजक पूजिताः।
इन्द्र माता, तथेन्द्रेन्द्रा, इन्द्र वक्ष निवासिनी।।४५।।
कोटीन्द्रा पूजिता दीप्ता दीप्तरूपा सदाधृता।
सृष्टीश्वरी सृष्टिधात्री सृष्टिरूपा च सृष्टिदाः।।४६।।
सृष्टि माता सुसृष्टा च सृष्टि पालक पालिकाः।
सृष्टा कुसृष्टा सत्सृष्टा सुसृष्टा प्राणदायिनी।।४७।।
तिथिरन्मासा च पक्षा च कृष्ण शुक्ल विलासिनी।
दिवानिशि सन्ध्या च यामिनी घोर यामिनी।।४८।।
तन्द्रा निद्रा च राधा च साधकानन्द दायिनी।
राधानन्द स्वरूपा च राधानन्द स्वरूपिनी।।४९।।
कृष्णजाया च राधा च राधिका नर्तकी तथा।
कृष्णेन्दु हृदया मैत्री मोहिनी मोहरूपिनी।।५०।।
गोपिनी गोपमाता च गोपीन्द्र पूजिता सदा।
योगभावा, योगभाव्या विधातानन्द दायिनी।।५१।।

योगेश्वरी च योगीन्द्रा योगानन्द प्रकाशिनी।
योग्या योज्ञाश्रया गंगा योगी सन्तोष कारिणी।।५२।।
योनिमुद्रा महामुद्रा धेनुमुद्राति धेनुका।
कुण्डमुद्रा च मुद्रात्मा मुद्रानन्द स्वरूपिनी।।५३।।
अंकुशा च शांकुशासी सिकारिलभयाभियाः।
दीर्घा दीर्घवती दीना खर्वांगी स्थूलकायिनी।।५४।।
सर्वरूपा च स्थूला च सूक्ष्मा च सूक्ष्मरूपिणी।
विधात्री च सुधात्री च दुर्भूति दुर्जया तथा।।५५।।
विजया जया च रूपा च निर्जया जय रूपिनी।
जयेश्वरी च जयदा जय मंगलदायिनी।।५६।।
जयरूपा जगज्जीवा जगजाढ्या विलासिनी।
अमृतावमृता सह कीर्त्तिदायिनी सदा।।५७।।
कीर्त्तिदा शुभदा शौरी सुन्दरी लय वासिनी।
मोहिनी मोहदात्री च मोहरूपा सुकुण्डली।।५८।।
मोहा मोहवती राधा सुन्दरी पुर सुन्दरीः।
आद्याशक्तिर्महाशक्तिः शक्ति मंगलदायिनी।।५९।।
विद्याधरी कृष्णपत्नि सा राधाकान्तये स्थिताः।
गदिनी चक्रिणी भूपा चक्र भूपुर वासिनी।।६०।।
चक्रेश्वरी चक्रमाता चक्रभागी च चन्द्रिका।
षट्चक्रा मूलचक्रा मूलाधार निवासिनी।।६१।।
चक्रवारी, चक्रकारी, चक्रनाशा च चक्रिकाः।
विचक्रा च सुचक्रा च चक्रमण्डल पालिनी।।६२।।
स्वर्णवर्णा द्विभूजा च जगदानन्द कारिणीः।।
वन्धिता बान्धवानन्दा, बान्धवानरुतोषिताः।।६३।।
सुखिनी दुःखिनी चैव दुःखदायि च दुःखिता।।
दुःखसेवि च दुःखहा दुःखदारिद्र नाशिनी।।६४।।
दारिद्र भयहारि च दारिद्र तोष कारिणीः।
अष्टपत्र स्थिता पूर्वा शोभसार निवासिनी।।६५।।

षट्कोणा च त्रिकोणा च नवकोण निवासिनी।
कोण पंचदशांगी च कोणमाता च कुंकुमा।।६६।।
कुंकुमाचैव कामेशी कुंकुमेश्वर वन्दिताः।
कुंकुमांगी च सर्वांगी कुंकुमाद्रवलेपिताः।।६७।।
चन्दनाशंकिनी गंगा गन्धर्वालय वासिनी।
गन्धर्वागण मार्गस्था देव गन्धर्व पूजिताः।।६८।।
देवमाता ब्रह्मरूपा ब्रह्मानन्द स्वरूपिनी।
विष्णुमाता च विश्वेशी विष्णवे वरदायिनी।।६९।।
वैष्णवी शिवदा चैव शिवानन्द स्वरूपिनी।
शिवा शिवा शिवेसि च शिवकण्ठस्थिता सदा।।७०।।
आनन्द राधिकादेवि निन्दाकारी विनासिनी।
क्षमा क्षेमा च राधा च सा राधा ज्योत्स्ना स्वरूपिनी।।७१।।
मनस्विनी च माया च तिमिरान्ध विनासिनी।
तिमिरा तीव्रवेगा च शरत् ज्योत्स्ना विभूषणा।।७२।।
मित्रावती च गुह्या च तथा गुह्यतरापराः।
सम्प्रदाया कुला कौला कुतूहल विभाविनी।।७३।।
जननी जामिनी घोरा पापदुर्ग विनासिनी।
सुरम्या सुरभि चैव सुरभानन्द वन्दिनी।।७४।।
पुष्करा पुष्करी चैव पुष्करेश्वर रक्षिता।
जलाधारा जलांगी च जलनिर्माण शालिनी।।७५।।
विश्वेश्वरी राधिका च विश्व स्तवन तोषिताः।
इड़ा च पिंगला चैव सुसुम्ना चित्रनाभिकाः।।७६।।
सछिनी सम्भवी वीणा मन्त्रताल समन्विताः।
वाद्यप्रीता च वाद्या च वाद्यवादन तत्पराः।।७७।।
वाद्यनादा सुनादा च विनोदा नाद भूषणाः।
भ्रामरी चैव नेपाली कामी वृन्द निवासिनी।।७८।।
स्वदेशी च विदेशी च विदारी दारुमूर्त्तिकाः।
रूपेश्वर स्वरूपा च रूपेश्वर स्वरूपिनी।।७९।।

ग्रहिनी गदना गेहा गृहानन्द पुरन्धिनी।
इन्द्रानी ससुरा शुक्रा शुक्र सन्तोष कारिणी।।८०।।
शुक्ल पुष्पालिका शुक्ला शुक्लालय निवासिनी।
इक्षुरस प्रिया इक्षु विश्वकानन वासिनी।।८१।।
राकारा च धकारा च आकार सर्वभूषणाः।
सर्वेश्वरी राधिका च कृष्ण प्राण च तत्परा।।८२।।
स्वप्नेश्वरी च दुःस्वप्ना सुस्वप्ना सुप्रसादिनी।
पूर्णजा च पूर्णवतिः पूर्णानन्द स्वरूपिनी।।८३।।
अन्नपूर्णा चान्नदा च अन्नपूर्ण प्रकाशिनी।
अन्नपूर्णेश्वरी पुण्या पुण्य भूमि निवासिनी।।८४।।
माधवी मधुमती चैव मधु भोजन भोजनाः।
मधुपानेश्वरी मूर्ति मध्वसानु प्रदायिनी।।८५।।
माधवी चैव माधुर्या माधवानन्ददायिनी।
राधेश्वरी च राधेशी राधा राधेति घोषिणी।।८६।।
अति भद्रा सुभद्रा च भद्रलोचन लोचनाः।
धरित्री धनदा धन्या धन्यारूपा धराधनुः।।८७।।
धरणी धनशब्दा च धनमानी धना धराः।
धूर शब्दा धना माल्या धन्यांगी धननाशिनी।।८८।।
धनहा धनलाभा च धनलभ्या महातनु।
अशान्ता सन्तरूपा च रागमार्ग निवासिनी।।८९।।
गगनागण सेव्या च गणार्थी गण बल्लभाः।
गणत्रागणऽगण्या गमनागम बन्दिनीः।।९०।।
गम्यदागमनाशी च गदहागद बर्द्धिनी।
स्थैर्या च स्थैर्यनाशी च स्थैर्यान्तकरिणी कला।।९१।।
धात्री कर्त्री प्रिया प्रेमा प्रियदा प्रियबर्द्धिनी।
प्रियहा प्रियभावा च प्रियभाव तथा तनु।।९२।।
कालिन्दीकुल-निलया कलाकान्ता कटाकूहूः।
कुलिना कमला काली, कल्याणी कुम्भ धारिणी।।९३।।

कुशला कुशलाधारा, कुशला कुशलोचना।
कोमलांगी च कृष्णा च कृष्णरूपा सनातनी।।९४।।
कृष्णवस्त्रा कृष्णरूपा कृष्णमान्या कृशोदरी।
कृशप्राणा कृष्णरता कृष्णनन्दा कुशेशयाः।।९५।।
कलंकरहिता कन्या कमण्डलु करादृषिः।
कमला कमलारि लोलाक्षी कालकाचल विग्रहाः।।९६।।
कन्दर्प कोटि लीलाया कारणं कण्डू कारणम्।
कीर्त्तिका कीर्त्तिदा राधा कीर्त्ति कीर्ति विवर्द्धिनी।।९७।।
कुमारी कालिका काली कालरात्रि कलंकिनी।
कलाराध्या कलाराधा कला कालामुखी कृतिः।।९८।।
कौशेय रसना कुल्या कुरूकुन्दा सनातनी।
कनकन्ननु प्रेमा च कनस्कमल मेखला;।।९९।।
कलधौत तनुक्षीण्या कलेशिनी क्लेशनाशिनी।
किशोरी केशिनी केशा केशव प्राणबल्लभा।।१००।।
खगेन्द्रवाहन रता खगेन्द्र वदना खरा।
खरनाशा खरखीत्थ खरभानु सुरतारता।।१०१।।
खेलदुस्तरता खेल, खेल गोपानृत्यशालिनी।
खञ्जरिट्गति गञ्जा खञ्जत खरलोचना।।१०२।।
गायत्री गगना गीता गुणसिन्धुर्गुणाकराः।
गुणाधारा गुणाराध्या गुर्णदोष विवर्जिताः।।१०३।।
गुणानिधि गुणधारा गुणकीर्त्ति प्रवर्त्तिनी।
अनन्तानन्त रूपा च अनन्त रूप धारणाः।।१०४।।
अनन्तकोटि लावण्या अनन्त रूप निश्वनाः।
अनन्तानन्तशायी अनन्तरूप राधिका।।१०५।।
अचला निश्चला राधा स्थूलरूपा च सूक्ष्मिणी।
भोगवती च भोगा च भगवत्यनुरागिनी।।१०६।।
राका राधा त्रिवाचा च हारिणी प्राणधारिणी।
अदीप्ता च सदीप्ता च शीतलावृन्दवासिनी।।१०७।।

कृष्ण विलासी चित्रा संज्ञस्था संगगामिनी।
अमृता तुलसीवृन्दा कैटभी कपटेश्वरीः।।१०८।।
उग्रतारा सत्यभामा माधवी मधुमति तथा।
पुराण भारत प्रीत्या भारतानन्द रूपिणी।।१०९।।
सर्वशक्ति धरादेवी मुकुन्दांगी सनातनी।
राधा रासेश्वरी देवी राधिका सिद्धिदायिनी।।११०।।
राधा राध्या राधिका च राधिकानन्द दायिनी।
य इदं पठति स्तोत्रं राधानाम सहस्रकम्।।१११।।
त्रिकाल पठनाद्देवी मुच्यते नात्र संशयः।
यः पठेत प्रातरुत्थाय गोसहस्र फलं लभेत्।।११२।।
अष्टम्याश्च नवम्यां वा पूर्णिमा चन्द्रवासरे।
वारमेकं पठित्वा च साक्षीदीशो जगत्पति।।११३।।
वाणी वसति तत्कण्ठे सुस्थिरा जीवनावधिः।
द्विपाठे कविता प्राप्ति मूर्खोऽपि पण्डितो भवेत्।।११४।।
त्रिवारं य पठेत् भक्त्या वैकुण्ठं याति निश्चितम्।
अष्टम्यां मंगलदिने पठेन्नाम सहस्रकं।।११५।।
नवम्यां चैव यामिन्यां ब्रजभूमि गतो नरः।
पौर्णमास्यां च सायाह्ने वारमेकं पठेत्सुधी।।११६।।
अशुचिर्वा पठेद्देवि साधको नात्र संशयः।
पुतेना मनसा नित्यं पूजयेत् राधिकेश्वरी।।११७।।
सदाचार विना देवी प्रापेरत्यन्त दुर्लभाः।
सत्यमेकं सत्यमेकं सत्यमेकं न संशयः।।११८।।
पूजाकाले जपं कुर्यात् सहस्रं च मनुत्तमम्।
शुक्ल पुष्पं च नैवेद्यं सर्वद्रव्य समन्वितम्।।११९।।
धूपदीपैर्महादेवीं पूजयेत् राधिकेश्वरीं।
गन्धैर्माल्यैश्च ताम्बूलैः कस्तूरी कुसुमान्वितैः।।१२०।।
सशक्ति राधिकायाश्च पूजयेत् भक्ति भावतः।
बन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतपुत्रा च यांगना।।१२१।।

श्रवणाद्धारणात्तस्य जीववत्सा भवेत् ध्रुवं।
गन्धचन्दन सिन्दुरैः यावकैर्भूर्ज-पत्रके।।१२२।।
लिखित्वा धारयेद्वामे नारी, दक्षभुजे पुमान्।
धनंधान्यं सुतां चैव, लभते निश्चलां प्रियं।।१२३।।
सदा गुप्ता भवेद्देवि राधानाम सहस्रकम्।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तितस्ततः।।१२४।।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्याद्यन्मनसि वर्त्तते।
निवेदितश्च नैवेद्यं स्वयं भुञ्जित शेषितं।।१२५।।
न हि ये गृह्णते मूढ़ा निरये निपतन्ति ते।
भक्ति पूर्वक भुञ्जानो जीवन्मुक्तो भवेदिते।।१२६।।
इति नाम्नां सहस्रां मे तव प्रीत्या प्रकाशितं।
त्वया गुह्यं तराकार्य स्वयोनिरिव पार्वती।।१२७।।

श्रीदेव्युवाच-

अप्रकाश्यमिदं देवं कथ प्रोक्तं त्वया शिव।
तदा तद्भक्तिर्युक्तो मां किं स्यान्देवतदुच्यताम्।।१२८।।

श्रीसदाशिव उवाच-

न दद्यादन्य भक्ताय कृपनाय सुरेश्वरी।
श्रीराधाकृष्ण भक्ताय शान्तायदम्भाऽहंकार वर्जिता।।१२९।।
स्वशिष्याय प्रदातव्य नास्ति मे दूषणं ततः।
शिरोदेयं सर्वदेयं, न देयं यस्य कस्यचित्।।१३०।।
नाम्ना राधा सहस्रंश्च देवानामपि दुर्ल्लभम्।
पुण्यात्पुण्यतरं नाम्नां सहस्रं सुप्रकाशितं।।१३१।।
किं बहूः कथयिष्यामि नास्तस्मादधिक स्तवः।
इति कल्पद्रुमं देवी दीयतां मम वाक्यतः।।१३२।।
साधुनाश्च प्रीत्यार्थाय स्तवमेतत् सुदुर्लभम्।।१३३।।

इति सनत्कुमार तन्त्रे पार्वतीश्वर सम्वादे
श्रीराधिका सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम्।।

जगद्गुरु भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य कृत

श्रीराधाष्टकम्

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की मान्यतानुसार भगवान् नारायण के आदेशानुसार चक्र सुदर्शन कलियुग में भक्ति प्रचारार्थ आचार्य रूप में द्वापर के अन्तिम चरण में दक्षिण भारत में अवतीर्ण हुए और भेदाभेद अर्थात् द्वैताद्वैत मत का प्रवर्त्तन किया। कुछ पाश्चात्य विद्वान्, तथा डा. दासगुप्त आदि के मतानुसार आप ११ वीं सदी में विद्यमान थे। आपने दशश्लोकी तथा राधाष्टक में पराप्रकृति कृष्णप्रिया राधातत्त्व का प्रतिपादन किया। आपके पिता अरुण ऋषि तथा माँ जयन्ती देवी परम वैष्णव थे। उत्तरकाल में आप गोवर्धन के निकट नीमगाँव में साधना में लीन रहे। वहाँ किसी साधु को सूर्यास्त के पश्चात् नीम के वृक्ष की ओट में स्वःतेज से सूर्यदर्शन कराया था। इस कारण इनका नाम निम्बार्काचार्य पड़ा और उक्त गाँव का नाम नीमगाँव पड़ा। इस सम्प्रदाय की प्रधान गद्दी पुष्कर के निकट सलेमाबाद में है। उपास्य श्रीराधाकृष्ण युगल एवं निम्बार्काचार्य सेवित श्रीसर्वेश्वर शालिग्राम शिला हैं। इस सम्प्रदाय में अनेक दार्शनिक एवं भक्ति ग्रन्थों की रचना हुई।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपादकृत

श्रीराधाष्टकम्

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै नमस्ते नमस्ते मुकुन्दप्रियायै।
सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्तः प्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्देन सार्धम्।।१
स्ववासोऽपहारं यशोदा सुतं वा, स्वदध्यादिचौरं समाराधयन्तीम्।
स्वदाम्नोदरं या बबन्धाशु नीव्या, प्रपद्ये नु दामोदर प्रेयसीं ताम्।।२
दुराराध्यमाराध्य कृष्ण वशे त्वं महाप्रेमपूरेण राधाभिधाऽभूः।
स्वयं नामकृत्या हरिप्रेम यच्छ, प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम्।।३
मुकुन्दस्त्वया प्रेमदोरेण बद्धः पतंगो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः।
उपक्रीड़यन् हार्दमेवानुगच्छन् कृपा वर्त्तते कारयातो मयेष्टिम्।।४
व्रजन्तीं स्ववृन्दावने नित्यकालं मुकुन्देन साकं विधायांकमालम्।
सदा मोक्ष्यमानानुकम्पा कटाक्षैः श्रियं चिन्तयेत् सच्चिदानन्दरूपाम्।।५
मुकुन्दानुरागेण रोमाञ्चितांगीम् अहं व्याप्यमानां तनुस्वेदविन्दुम्।
महाहार्द वृष्टया कृपापांगदृष्टया, समालोकयन्तीं कदा त्वां विचक्षे।।६
पदांकावलोके महालालसौघं, मुकुन्दः करोति स्वयं ध्येयपादः।
पदं राधिके ते सदा दर्शयान्तर्हृदीतो नमन्तं किरद्रोचिषं माम्।।७
सदा राधिकानाम जिह्वाग्रतः स्यात् सदा राधिका रूपमक्ष्यग्र आस्ताम्।
श्रुतौ राधिकाकीर्तिरन्तः स्वभावे, गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे।।८
इदं त्वष्टकं राधिकायाः प्रियायाः पठेयुः सदैवं हि दामोदरस्य।
सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि, सखीमूर्त्तयो युग्मसेवानुकूलाः।।९

इति जगद्गुरु भगवन्निम्बार्क महामुनीन्द्र विरचित
श्रीराधाष्टकम् सम्पूर्णम्।।

भगवान् श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभु कृत

श्रीराधिकाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु का आविर्भाव १६वीं सदी में बंगाल में गंगातट पर नवद्वीप धाम में हुआ था। आपके पिताश्री तत्कालीन पण्डितों में न्याय, मीमांसा के प्रकाण्ड पण्डित थे। तथा मिश्र पुरन्दर की उपाधि से अलंकृत थे। आपकी माँ शचीदेवी परम धर्म परायणा थीं। चैतन्यदेव का नाम विश्वम्भर था। उन्हें निमाई या गौरहरि कहकर पुकारते थे। विद्या अध्ययन में आपकी प्रसिद्धि थी। व्याकरण न्याय मीमांसा के पण्डित थे। आपने अनेक पापी एवं सन्तप्त जीवों का हरिनाम द्वारा उद्धार किया। संन्यासाश्रम का नाम श्रीकृष्णचैतन्य था। संकीर्तन एवं राधाभाव साधना में जगन्नाथपुरी में लीन रहे। प्रस्तुत "राधिकाऽष्टोत्तरशतनाम" तथा "राधारसमंजरी" "युगलपरिहारस्तोत्र" एवं "कृष्ण प्रेमामृत स्तोत्र" आदि रचनाएँ उनके द्वारा रचित दर्शायी जाती हैं। विविध संग्रहालयों तथा इस संस्थान में अनेक प्रतियाँ प्राप्य हैं। परन्तु गवेषक विद्वानों का मत है कि एकमात्र "शिक्षाष्टक" तथा २ या १ फुटकर श्लोक ही उनकी रचना है। इसके अतिरिक्त उनके नाम से आरोपित रचनाएँ हैं। कुछ भी हो बहुत सी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ एवं कुछ मुद्रित प्रतियों का मिलान करके यह पाठ प्रस्तुत किया गया है।

श्रीराधिकाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

श्रीमद्राधा-रसमयी रसज्ञा रसिका तथा।
रासेश्वरी रसभक्ति रसपूर्णा रसप्रदा।।१।।
रंगिणी रसलुब्धा च रासमण्डलकारिणी।
रस विलासिनी राधा राधिका रसपूर्णदा।।२।।
रामारत्ना रत्नमयी रत्नमाला सुशोभना।
रक्तोष्ठी रक्तनयना रक्तोत्पल विधारिणी।।३।।
रमणी रामणी गोपी वृन्दावनविलासिनी।
नानारत्ना विचित्रांगी नानासुखमयी सदा।।४।।
संसारपार तरणी वेणुगीत विनोदिनी।
कृष्णप्रिया कृष्णमयी कृष्णध्यान परायणी।।५।।
सदानन्दा क्षीणमध्या कृष्ण कृष्णलया शुभा।
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रा च कृष्णवल्लभा।।६।।
वृन्दावनेश्वरी देवी कृष्णरंगी परागतिः।
ध्यानातीता ध्यानगम्या सदाकृष्ण कुतूहली।।७।।
प्रेममयी प्रेमरूपा प्रेमा प्रेमविनोदिनी।
कृष्णप्रिया सदानन्दी गोपीमण्डलवासिनी।।८।।
सुन्दरांगी च स्वर्णाभा नीलपट्ट विधारिणी।
कृष्णानुरागिनी चैव कृष्णप्रेम सुलक्षणा।।९।।
निगूढ़रससारंगी मृगाक्षी मृगलोचना।
अशेषगुणपारा च कृष्णप्राणेश्वरी समा।।१०।।
रासमण्डल मध्यस्था कृष्णरंगी सदा शुचीः।
व्रजेश्वरी व्रजरूपा व्रजभूमिसुखप्रदा।।११।।
रसोल्लासा मदोन्मत्ता ललिता रससुन्दरी।
सर्वगोपीमयी नित्या नाना शास्त्रविशारदा।।१२।।

कामेश्वरी कामरूपा सदा कृष्णपरायणा।
पराशक्ति स्वरूपा च सृष्टिस्थिति विनाशिनी।।१३।।
सौम्या सौम्यमयी राधा राधिका सर्वकामदा।
गंगा च तुलसी चैव यमुना च सरस्वती।।१४।।
भोगवती भगवती भगवच्चित्तरूपिणी।
प्रेमभक्ति-सदासंगी प्रेमानन्द विलासिनी।।१५।।
सदानन्दमयी नित्या नित्यधर्म परायणी।
त्रैलोक्याकर्षिणी आद्या सुन्दरी कृष्णरूपिणी।।१६।।
शतमष्टोत्तरं नाम यः पठेत् प्रयतः शुचिः।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्यायां मध्यरात्रिके।
यत्रतत्र भवेत्तस्य कृष्णः प्रेमयुतो भवेत्।।१७।।

भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु कृत
राधिकाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

निकुंजलीला में श्रीप्रिया–प्रियतम
साभार : श्रीमहानिधि स्वामी, इस्कॉन, वृन्दावन

श्रीरूपगोस्वामी कृत

चाटुपुष्पांजलि स्तोत्र :

भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के अनन्य भक्त एवं पार्षदों में छह गोस्वामियों का स्थान महत्त्वपूर्ण है। ब्रज के लुप्ततीर्थों का उद्धार रसशास्त्र एवं दार्शनिक भित्ति पर भक्ति ग्रन्थों का सृजन, अर्च्चा विग्रहों की स्थापना आदि में इनका अद्‌भुत अवदान है। रस प्रस्थान की भूमिका में श्रीरूपगोस्वामी का स्थान सर्वाग्र है। इनके द्वारा रचित स्तवमाला के अन्तर्गत चाटुपुष्पांजली स्तोत्र एक प्रासादिक ग्रन्थ है। गौड़ीय सम्प्रदाय में अर्च्चन ध्यान के समय इसका पाठ मुख्य अंग है। श्रीराधारानी का नखशिख वर्णन है और स्वयं श्रीकृष्ण उनके अधीन हैं। सेवा एवं कृपा के लिए ऐकान्तिकी प्रार्थना है। इसका अक्षरशः बंगला छन्द में अनुवाद श्रीयदुनन्दनदास ने किया है और श्रीबलदेव विद्याभूषण ने स्तवमाला की संस्कृत टीका के अन्तर्गत इसकी टीका की है।

श्रीचाटुपुष्पांजलि स्तोत्रः

[गौड़ीय सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार यह स्तोत्र परम प्रासादिक एवं सिद्ध है। इसका नित्य पाठ पूजन अर्च्चन या मानसिक ध्यान के समय निष्ठा भाव से किया जाता है। उक्त स्तवराज का बंगला छन्दवद्ध तरीके से अक्षरशः मूलपाठ का अनुसरण करते हुए श्रीयदुनन्दन दास ठाकुर ने १८वीं सदी में की है। उसका पाठ संस्कृत अनभिज्ञ भक्त लोग करते हैं। श्रीराधाकृष्ण की कृपा प्राप्ति ही इसका मूल लक्ष्य है।]

नव - गोरोचना - गौरीं प्रवरेन्दीवराम्बराम्।
मणि-स्तवक-विद्योति-वेणीव्यलांगना-फणाम्।।१।।

उपमान - घटामान - प्रहारिमुखमण्डलाम्।
नवेन्दु-निन्दि-भालोद्यत्-कस्तूरी-तिलक-श्रियम्।।
भ्रूजितानंग-कोदण्डां-लोल-नीलालकावलिम्।।२।।

कज्वलोज्वलता-राजच्चकोरी-चारुलोचनाम्।।३।।

तिलपुष्पाभ-नाशाग्र-विराजद्वर-मौक्तिकाम्।
अधरोद्धत-बन्धूकां कुन्दाली-बन्धुर-द्विजाम्।।४।।

सरत्न-स्वर्ण-राजीव-कर्णिका-कृत-कर्णिकाम्।
कस्तूरी-बिन्दु-चिबुकां रत्न-ग्रैवेयकोज्वलाम्।।५।।

दिव्यांगद-परिष्वंग-लसद्भुज-मृणालिकाम्।
वलारि-रत्न-वलय-कलालम्बि-कलाविकाम्।।६।।

रत्नांगुरीयकोल्लासि-वरांगुलि कराम्बुजाम्।
मनोहर-महाहार-विहारि-कुच-कुट्मलाम्।।७।।

रोमालि-भुजगी-मूर्धरत्नाभ-तरलाञ्चिताम्।
वलित्रयी-लताबद्ध-क्षीणभंगुर-मध्यमाम्।।८।।

मणि-सारसनाधार-विस्फार-श्रोणि-रोधसम्।
हेमरम्भा-मदारम्भ-स्तम्भनोरु-युगाकृतिम्।।९।।

जानुद्युति-जित-क्षुल्ल-पीतरत्न-समुद्गकाम्।
शरन्नीरज-नीराज्य-मञ्जीर-विरणत-पदाम्।।१०।।

राकेन्दु-कोटि-सौन्दर्य-जैत्र-पादनख-द्युतिम्।
अष्टाभिः सात्विकैभावैराकुलीकृत-विग्रहाम्।।११।।

मुकुन्दांग-कृतापांगमनंगोर्मि-तरंगिताम्।
त्वमाराध्य-श्रियानन्दां बन्दे-वृन्दावनेश्वरि।।१२।।

अयि प्रोद्यन्महाभावे-माधुरी-विह्वलान्तरे।
अशेष-नायिकावस्था-प्राकट्यादद्भुत चेष्टिते।।१३।।

सर्वमाधुर्य-विञ्जोली-निर्मञ्छित-पदाम्बुजे।
इन्दिरा-मृग्य-सौन्दर्य-स्फुरदंघ्रि-नखाञ्चले।।१४।।

गोकुलेन्दुमुखी-वृन्द-सीमन्तोत्तंश-मंजरि।
ललितादि-सखीयूथ-जीवातु-स्मितकोरके।।१५।।

चटुलापांग-माधुर्य-विन्दुन्मादित-माधवे।
तातपाद-यशःस्तोम-कैरवानन्द-चन्द्रिके।।१६।।

अपार - करुणापूर - पूरितान्तर्मनोह्रदे।
प्रसीदास्मिन् जने देवि-निजदास्य-स्पृहाजुषि।।१७।।

कच्चित्त्वं चाटुपटुना तेन गोष्ठेन्द्र-सूनुना।
प्रार्थ्यमान चलापांग-प्रसादा द्रक्ष्यसे मया।।१८।।

त्वां साधु माधवी-पुष्पैर्माधवेन कलाविदा।
प्रसाध्यमानां स्विद्यन्तीं वीजयिष्याम्यहं कदा।।१९।।

केलि-विश्रंसिनो वक्र-केशवृन्दस्य सुन्दरि।
संस्काराय कदा देवि जनमेतं निदेक्ष्यसि।।२०।।

कदा बिम्बोष्ठि ताम्बूलं मया तव मुखाम्बुजे।
अर्प्यमाणं व्रजाधीश-सूनुराच्छिद्य भोक्ष्यते।।२१।।

व्रजराज कुमार वल्लभा-कुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत्।।२२।।

करुणां मुहुर्थये परं तव वृन्दावन-चक्रवर्तिनि।
अपिकेशिरिपोंयया भवेत् स चाटुप्रार्थन भाजनं जनः।।२३।।

इमं वृन्दावनैश्वर्यां जनो यः पठति स्तवम्।
चाटु पुष्पांजलि नाम स स्यादस्याः कृपास्पदम्।।२४।।

इति श्रीपाद रूपगोस्वामी विरचितं चाटुपुष्पांजलि स्तवः समाप्तम्।।

श्रीरघुनाथ दास गोस्वामी कृत

श्रीराधिकायाः प्रेमाम्भोज मरन्दाख्य स्तवराज

श्रीचैतन्य महाप्रभु के कृपापात्र छह गोस्वामियों में रघुनाथदास गोस्वामी का विशेष स्थान है। आपके प्रशस्ति में राधाबल्लभीय वाणीकार सन्त ध्रुवदासजी कहते हैं–

अति विरही रघुनाथजी राधाकुण्ड स्थान।
तक्लौन ब्रज को लियौ परस्यौ नहीं कछु आन।।
अष्टयाम चिंतावनी गौरश्याम अभिराम।
सोवत हूँ रसना रटै राधा, राधा नाम।।

(श्रीध्रुवदासकृत भक्तनामावली से उद्धृत)

विपुल ऐश्वर्य के अधिकारी धन, ऐश्वर्य,भार्या एवं गृहस्थाश्रम को त्यागकर एकान्त भाव से चैतन्यदेव की शरण में पुरीधाम में रहे। महाप्रभु ने उन्हें उपदेश देकर, गिरिराज गोवर्धनशिला और प्रसादी गुंजामाला प्रदान कर, ब्रज में रूप, सनातन गोस्वामी के आनुगत्य में भजन हेतु प्रेरित किया। आप राधाकुण्ड तट पर अष्टयाम मानसी सेवा में तल्लीन रहते थे। लीला स्फूर्त्ति होने पर संस्कृत पद्यों में रचना करते थे। आपकी सभी रचनाओं को एकत्रित कर जीव गोस्वामी ने स्तवावली नाम से संकलित किया। प्रस्तुत रचना उन्हीं में से एक है। राधारानी की कृपा हेतु पाठ ही फल है।

श्रीराधिकायाः प्रेमाम्भोज मरन्दाख्य स्तवराजः

।।श्रीराधिकायै नमः।।

महाभावोज्वलच्चिन्ता-रत्नोद्भावित-विग्रहाम्।
सखी प्रणयसद्गन्ध-वरोद्वर्त्तन-सुप्रभाम्।।१।।
कारुण्यामृत-वीचिभिस्तारुण्यामृत-धारया।
लावण्यामृत-वन्याभिः स्नपितांग्लपितेन्दिराम्।।२।।
ह्रीपट्टवस्त्रगुप्तांगी सौन्दर्य-घुश्रृणाश्चिताम्।
श्यामलोज्वलकस्तूरी-विचित्रित कलेवराम्।।३।।
कम्पाश्रु-पुलक-स्तम्भ-स्वेद-गद्गद-रक्तताः।
उन्मादो जाड्यमित्येतै रत्नैर्नवभिरुत्तमैः।।४।।
किलप्तालंकृति-संश्लिष्टां गुणाली-पुष्पमालिनीम्।
धीराधीरात्व-सद्वास-पटवासैः परिष्कृताम्।।५।।
प्रच्छन्न-मान-धम्मिलां सौभाग्य-तिलकोज्वलाम्।
कृष्णनाम-यशः-श्रावः-वतंसोल्लासि-कर्णिकाम्।।६।।
राग-ताम्बूल-रक्तौष्ठीं प्रेम कौटिल्य कज्जलाम्।
नर्मभाषित-निःस्यन्द-स्मित-कर्पूरवासिताम्।।७।।
सौरभान्तःपुरे गर्व - पर्यंकोपरि लीलया।
निविष्टां प्रेमवैचित्त्य - विचलत्तरलाञ्चिताम्।।८।।
प्रणयक्रोध-सच्चोली-बन्ध-गुप्तीकृत-स्तनाम्।
सपत्नीवक्त्र-हृच्छोषि-यशः-श्रीकच्छपीरवाम्।।९।।
मध्यतात्मसखी-स्कन्ध-लीला-न्यस्त-कराम्बुजम्।
श्यामां श्याम-स्मरामोद-मधूलि-परिवेशिकाम्।।१०।।
त्वां नत्वा याचते धृत्वा तृण दन्तैरयं जनः।
स्वदास्या मृत सेकेन जीवयामुं सुदुःखितम्।।११।।

न मुञ्चेच्छरणायातमपि दुष्टं दयामयः।
अतोगान्धर्विके हा हा मुञ्चैनं नैव तादृशम्।।१२।।
प्रेमाम्भोजमरन्दाख्यं स्तवराजमिमं जनः।
श्रीराधिका कृपाहेतुं पठंस्तद्दास्य माप्नुयात्।।१३।।

इति श्रीमद्रघुनाथदास गोस्वामी विरचितं
श्रीराधिकायां प्रेमाम्भोज मरन्दाख्य स्तवराज सम्पूर्णः।।

श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीकृत

राधिकास्तुति

श्रीचैतन्य महाप्रभु के कृपापात्र तथा परम वीतराग संन्यासी प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद वृन्दावन में कालीदह में निवास करते थे। उनकी चैतन्य निष्ठा धामनिष्ठा तथा राधादास्य स्पृहा प्रसिद्ध है। आपकी रचनाएँ संस्कृत में प्राञ्जल, भाव, भक्ति, छन्द अलंकार आदि से पूरित है। प्रस्तुत रचना आपकी "संगीत–माधव" काव्य में से ली गई है। आपकी रचनाओं में चैतन्य चन्द्रामृत, संगीतमाधव, वृन्दावन महिमामृतम्, श्रुति स्तुति व्याख्या, गोपाल तापिनी टीका, आश्चर्यरास प्रबन्ध, कामगायत्री व्याख्या आदि प्रसिद्ध हैं। आपके व्यक्तित्व कृतित्व पर शोध हो गया है। (स्व० श्रीमती) डॉ. शकुन्तला अग्रवाल ने सशक्त शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है।

श्रीराधिका स्तुति

(बसन्त रागेण गीयते)

स्फुरतु मनो मम निरबधि राधाम्।
मधुपति रूप गुण श्रवणोदित-सहज मनोभव बाधाम्।।१
सुरुचिर कबरी बिराजित कोमल-परिमल मल्लिसुमालाम्।
मदचल खञ्जन-खेलन गंजन लोचन कमल विशालाम्।।२
मद करिराज-बिराजदनुत्तम-चलित ललित गति भंगीं।
अति सुकुमार-कनक नवचम्पक गौरमधर मधुरांगीम्।।३
मणि केयूर ललित बलया वलि मण्डित मृदु भुजबल्लीं।
प्रतिपदमद्भुत रूप चमत्कृति मोहन युवतीमतल्लीम्।।४
मृदु मृदुहास ललित मुखमण्डल कृत शशिबिम्ब बिडम्बां।
किंकिणिजाल-खचित-पृथुसुन्दर-नवरसराशि नितम्बाम्।।५
चित्रित-कञ्चुलिका-स्थगितोद्भट-कुचहाटकघट शोभाम्।
स्फुरदरुणाधरस्वादुसुधारस-कृत हरिमानस लोभाम्।।६
सुन्दर-चिबुक-बिराजित-मोहन-मेचक बिन्दु विलासां।
सकनकरत्न खचित पृथुमौक्तिक-रुचिरुचिरोज्वलनाशाम्।।७
उज्ज्वलराग रसामृत-सागर-सारतनुम् सुखरूपां।
नवनवायमान सहज सुन्दर रुचि रुचिरवर भूषां।।८
नूपुरहार-मनोहर कुण्डल-कृत रुचिमरुण दुकूलाम।
पथि पथि मदन मदाकुल-गोकुलचन्द्र कलितपदमूलाम।।९
रसिकसरस्वति - गीतमहाद्भुत - राधारूप रहस्यं।
बृन्दावन रसलालस - मनसामिदमुपगेयमवश्यम्।।१०

इति श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीपादकृतः संगीत–माधव काव्ये श्रीराधिका स्तुतिः समाप्तम्।।

गोस्वामी विट्ठलनाथ कृत

श्रीराधा-प्रार्थना चतुःश्लोकी

आचार्य विट्ठलनाथ गोस्वामी पुष्टिमार्ग प्रवर्त्तक श्रीबल्लभाचार्यपाद के कनिष्ठपुत्र। विशेष गुण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी, विद्वान्, भक्ति मार्ग एवं ब्रजसंस्कृति के उन्नतिकल्प में संगीत, साँझीकला, चित्रकला आदि का संयोजन करना। १६वीं सदी में आपके द्वारा अष्टछाप कवियों को मर्यादा देकर श्रीनाथजी की सेवा में संगीत का समावेश, भोगराग, शृंगार में सौष्ठव विधान। अन्य सम्प्रदाय के आचार्यों एवं भक्तों का यथोचित सम्मान, ग्रन्थों की रचना, साहित्यानुराग तथा संस्कृत के साथ ही साथ उर्दू, फारसी, गुजराती आदि कई भाषा में अधिकार। बादशाह अकबर द्वारा आपको हिन्दू धर्माधिकारी पद पर प्रतिष्ठित किया गया। आपने अपने पिताश्री की रचनाओं की रहस्यात्मक टीका की। शृंगार रस मण्डन आपकी एक सुन्दर काव्य रचना है। प्रस्तुत रचना अति लघु होते हुए भी, श्रीराधा महिमा विस्तारक एवं हृदयस्पर्शी है। गौड़ीय सम्प्रदाय में छः गोस्वामी में राधाकुण्डवासी श्रीरघुनाथदास गोस्वामी, स्वरचित "श्रीगोपालराजस्तोत्र" में आपको प्रेम का भण्डारी कहा है।

'चापत चरण मोहन लाल'
साभार : गोस्वामी श्रीदम्पतिकिशोरजी चित्रकार

श्रीराधा प्रार्थना चतुःश्लोकी

कृपयति यदि राधा वाधिताशेषबाधा,
किमपरमवशिष्ठं पुष्टिमर्यादयोर्मे।
यदि वदति च किञ्चित स्मेरहासोदित श्री-
द्विजवरमणिपंक्त्या मुक्ति शुक्त्या तदा किम् ।।१।।

श्यामसुन्दर शिखण्ड शेखर स्मेरहास मुरली मनोहर।
राधिका रसिक मां कृपानिधेस्वप्रियाचरण किंकरी कुरु।।२।।

प्राणनाथ वृषभानुनन्दिनी-श्रीमुखाब्ज-रसलोलषट्पद।
राधिका पदतले कृतस्थिति त्वां भजामि रसिकेन्द्रशेखर ।।३।।

संविधाय दशने तृणं विभो प्रार्थये ब्रजमहेन्द्रनन्दन।
अस्तु मोहन तवाति वल्लभा जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया।।४।।

गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ कृतः
श्रीराधा प्रार्थना चतुःश्लोकी सम्पूर्णम्।।

आचार्य मोहनचन्द्र गोस्वामी रचित

श्रीराधिकाष्टक

श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय या श्रीहित सम्प्रदाय प्रवर्त्तक वंशी के अवतार श्रीहरिवंश गोस्वामी के तृतीय पुत्र रूप में श्रीमोहनचन्द्र गोस्वामी का अवतरण हुआ। आपकी शिक्षा–दीक्षा संस्कार पिताश्री से प्राप्त हुआ था। आप विद्वान् एवं सुगायक भी थे। आपकी रचनाओं में श्रीकृष्णाष्टक तथा श्रीराधिकाष्टक प्रसिद्ध है एवं सम्प्रदाय में नित्य पाठ्य है। प्रस्तुत रचना राधारानी के महिमा, रूप, गुण, भाव तथा करुणा रस से सिक्त है। इसका पाठ करने वाले को उनकी चरण सेवा और कृपा प्राप्ति होती है।

श्रीराधिकाष्टक

गोकुलेन्द्र सूनुमत्त भृंगचारुमल्लिकां,
शुद्ध भावना स्वकीय भक्ति कल्प वल्लिकाम्।
नव्य यौवन प्रमोद मंजुमन्द भाषिणीं,
राधिकामहं भजे निकुञ्जधाम वासिनीम्।।१।।
इन्द्र गोपकान्तिहारिं चारुशैल धारिणीं,
भ्रूविलासराशितृष्ण कृष्णचित्त हारिणीम्।
श्यामसुन्दर प्रमोद वृद्धि मन्दहासिनीं,
राधिकामहं भजे निकुंज धाम वासिनीम्।।२।।
अंग सन्निधानरत्न मंडल प्रमंडिनीम,
कान्ति पंक्तिभिः प्रतृप्त जाति रूप खंडिनीम्।
पूर्ण शारदेन्दुनिन्द वक्त्र सुप्रकाशिनीं,
राधिकामहं भजे निकुंज धाम वासिनीम्।।३।।
प्रेमपूरि पूरित प्रतेक नेत्र भंगिनीम्,
प्रेममत्तचित्तनन्दसूनु संग रंगिनीम्।
आलिमंडली विदग्धता समूह शासिनीं
राधिकामहं भजे निकुञ्जधाम वासिनीम्।।४।।
प्रेमसातयात लोम हर्षणेन मंडितां,
प्रीतिरीति रासकेलि वर्द्धनाय पण्डिताम्।
प्रेयसी कदम्बमन्त रासदा विलासिनीं,
राधिकामहं भजे निकुञ्जधाम वासिनीम्।।५।।
मंजुमेघसार गन्ध सार सार रूषितां,
मूर्द्धनील विन्दु नासिकारुणा विभूषिताम्।
प्राणनाथ संततामि संगमाविलासिनीं
राधिकामहं भजे निकुंजधामवासिनीम्।।६।।

गोपनागरेन्द्रकत्थितोरि काल कारिणीं,
गान तान मुग्ध कृष्ण वंशिका प्रहारिणीम्।
अंघ्रिमानोजकोटि रूप गर्व नाशिनीम्,
राधिकामहं भजे निकुंज भूविलासिनीम्।।७।।
प्रीति विह्वलप्रिय प्रकृष्ट वक्ष शायिनीं,
नम्र वक्त्र सूक्तिभिर्मुकुन्द भावदायिनीम्।
प्रेममत्तता भरेण कोटि काम हासिनीम्,
राधिकामहं भजे निकुंजधाम वासिनीम्।।८।।
एतद्दष्टकं सुचारुं सर्व सद्गुणाधिके,
वर्णितं त्वदीय मोहनेन सुष्ठु राधिके।
प्रेमतस्य वर्द्धय स्वपाद सेवने सदा,
राधिका महं भजे निकुंजधाम वासिनीम्।।९।।

इति श्रीमत् हरिवंश गोस्वामी सूनु श्रीमोहनचन्द्र गोस्वामी कृतः श्रीराधिकाष्टकम् सम्पूर्णः।।

श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी कृत

श्रीराधिकाष्टकम्

१६वीं शताब्दी में गौड़ीय सम्प्रदाय में श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुयायी परिकरों एवं षड़गोस्वामीपादों के आनुगत्य अनेक भक्त, दार्शनिक, विद्वानों ने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार किया। उनमें श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी का स्थान प्रमुख है। आप परम भक्त, दार्शनिक विद्वान् एवं इस सम्प्रदाय के सम्वाहक हैं। आपने प्रमुख तीन अमृतधाराओं का प्रवाह किया। १. गोविन्दलीलामृत महाकाव्य (संस्कृत), २. कृष्णकर्णामृत–सारंगरंगदा टीका (संस्कृत) तथा ३. चैतन्य चरितामृत (बंगला) इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर पद ब्रजबोली में भी प्राप्त होता है। प्रस्तुत राधिकाष्टक गोविन्दलीलामृत में से लिया गया है। राधाकृपा प्राप्ति एवं चरणसेवालाभ ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

श्रीराधिकाष्टकम्

कुंकुमाक्त-काञ्चनाब्ज-गर्वहारि-गौरभा,
पीतनाञ्चिताब्ज-गन्धकीर्त्ति निन्दि सौरभा।
वल्लभेश-सूनु-सर्व-वांछितार्थ-साधिका,
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।१।।

कौरविन्द-कान्ति-निन्दि-चित्र-पत्रशाटिका
कृष्ण-मत्तभृंग-केलि-फुल्ल-पुष्प-वाटिका।
कृष्ण-नित्य-संगमार्थ पद्मबन्धु-राधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।२।।

सौकुमार्य-सृष्ट-पल्लवालि-कीर्त्ति-निग्रहा,
चन्द्र-चन्दनोत्पलेन्दु-सेव्य-शीत-विग्रहा।
स्वाभिमर्श-बल्लवीश काम-ताप-वाधिका,
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।३।।

विश्वबन्द्य-यौवताभि वन्दितापि या रमा,
रूप-नव्य-यौवनादि-सम्पदा न यत्समा।
शील-हार्द-लीलया च सा यतोऽस्ति नाधिका
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।४।।

रास-लास्य गीत-नर्म-सत्कलालि-पण्डिता,
प्रेम-रम्य-रूप-वेश-सद्गुणालि-मण्डिता।
विश्व-नव्य-गोप-योषिदालितोऽपि याधिका,
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।५।।

नित्य-नव्य-रूप-केलि-कृष्णभाव-सम्पदा
कृष्णराग-बन्ध-गोप-यौवतेषु-कम्पदा।
कृष्ण-रूप-वेश-केलि-लग्न-सत्समाधिका,
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।६।।

स्वेद-कम्प-कण्टकाश्रु-गद्गदादि-संचिता,
मर्ष-हर्ष-वामतादि-भाव-भूषणाञ्चिता।
कृष्ण-नेत्र-तोषि-रत्न-मण्डनालि-दाधिका,
मह्यमात्म-पादपदम्-दास्यदास्तु राधिका।।७।।

या क्षणार्ध-कृष्ण-विप्रयोग-सन्ततोदिता,
नेक-दैन्य-चापलादि-भाववृन्द-मोहिता।
यत्नलब्ध-कृष्णसंग-निर्गताखिलाधिका,
मह्यमात्म-पादपद्म-दास्यदास्तु राधिका।।८।।

अष्टकेन यस्त्वनेन नौति कृष्ण वल्लभाम्,
दर्शनेऽपि शैलजादि-योषिदालि-दुर्लभाम्।
कृष्णसंग-नन्दितात्म-दास्य-सीधु-भाजनम्,
तं करोतु नन्दितालि-सश्चयाशु सा जनम्।।९।।

इति श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी विरचितं
श्रीराधिकाष्टकम् समाप्तं।।

श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीपाद कृत

श्रीराधिकाध्यानामृत स्तोत्रं

१८ वीं सदी में गौड़ीय सम्प्रदाय में परम दार्शनिक, रसिक भक्त एवं भागवत, गीता आदि के सरस टीकाकार विभिन्न स्तव स्तोत्र अष्टकादि स्वरचित संग्रह 'स्तवामृत लहरी' नाम से प्रसिद्ध है। श्रीरूपगोस्वामी पाद की रचनाओं के टीकाकार एवं सम्प्रदाय श्रीवृद्धि में आपकी प्रमुख भूमिका रही। आपके ही शिक्षा छात्र श्रीबलदेव विद्याभूषण और पं. कृष्णदेव सार्वभौम थे। आपका वेषाश्रय का नाम 'हरिबल्लभ' था। आपकी ब्रजबोली में पद क्षणदागीति चिन्तामणि में प्राप्त हैं। प्रस्तुत रचना राधारानी के नख–शिख वर्णन एवं गुणानुवाद से पूरित है।

ठाकुर श्रीराधावल्लभलालजी महाराज
अठखम्भा, वृन्दावन

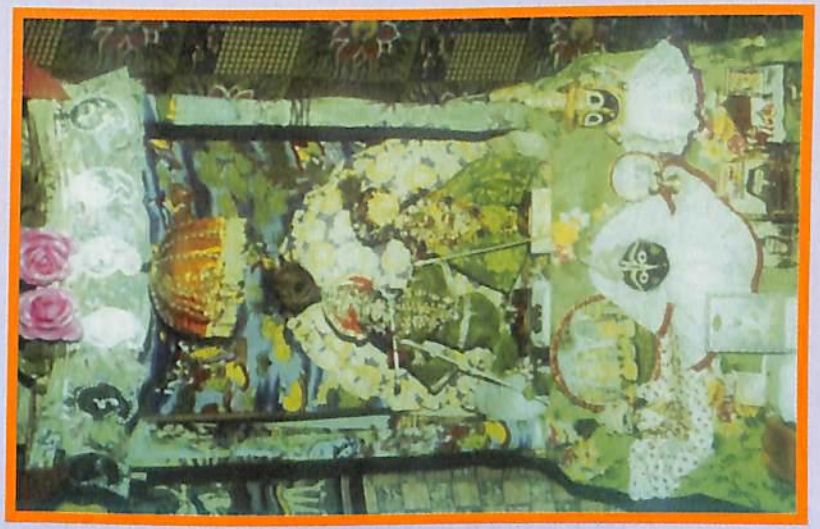

सुबल–मिलन शृंगार
ठाकुर श्रीराधामाधव जी महाराज, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन

श्रीराधिकाध्यानामृत स्तोत्रं

तडिच्चम्पक-स्वर्ण-काश्मीर-भासः
स्वकान्त्या भृशं दण्डयित्र्या विलासः।
स्वरूपस्य तस्यास्तु कस्यास्तु वर्ण्यः
सुबोध-द्रवो नामवर्णोऽपि कर्ण्यः।।१।।

प्रफुल्लालि-पुष्प-प्रभा-द्योतितानां
लसच्चन्द्रिका-प्रोत-मेघोपमानाम्।
कचानां सचातुर्य-बन्धेयमेणी-
दृशः सच्चमर्यग्रिमा भाति वेणी।।२।।

महानर्घ-चूड़ामणिः कामलेखा
प्लुता राजते चारु-सीमन्तरेखा।
उडुद्योति-मुक्तैकपंक्ति वहन्ती
किमास्येन्दु-सौधेकधारोच्चलन्ती।।३।।

नवेन्दुपमे पत्रपाश्या प्रभाले
सुलीलालकालीवृते चारुभाले।
मदेनान्तरा चित्रितं चित्रकं तत्
विभात्यच्युतातृप्त-नेत्रैकसम्पत्।।४।।

अतिश्यामला विज्य-कन्दर्प-चाप-
प्रभाजिष्णुतां-भ्रूद्वयी कुञ्चिताप।
मुखाम्भोज-माध्वीक-पानादभीष्टा-
दचेष्टालि-पंक्तिः किमेषा निविष्टा।।५।।

सफर्याविव प्रेष्ठ-लावण्य-वन्ये-
प्सिते राजतस्ते दृशौ हन्त ! धन्ये !
लसत्कज्ज्वलाक्ते तयोः श्यामपक्ष्म
क्वचिद्विन्दते कान्त-ताम्बूल-लक्ष्म।।६।।

तडित्-कन्दली मूर्ध्नि नक्षत्रयुक्ता
स्थिराधः सुधा-बुद्बुद-द्वन्द्वसक्ता।
यदि स्यात् सरोजान्तरे ताञ्च भासा
मृगाक्ष्यास्तिरस्कुर्वती भाति नाशा।।७।।

कपोलाक्षि-बिम्बाधर-श्री-विषक्तं
भवेन्मौक्तिकं पीतनीलातिरिक्तम्
स्मितोद्यत् पुटोदीर्ण-माधुर्यवृष्टि-
र्लसत्यच्युत-स्वान्त-तर्षैकसृष्टिः।।८।।

लसत्कुण्डले कुण्डलीभूय मन्ये
स्थिते कामपाशायुधे हन्त ! धन्ये।
श्रुती रत्नचक्रीशलाकाश्चिताग्रे
दृशौ कर्षतः श्रीहरेर्ये समग्रे।।९।।

अतिस्वच्छमन्तःस्थ-ताम्बूलराग-
च्छटोद्गारि-शोभाम्बुधौ किं ललाग।
कपोलद्वयं लोल-ताटंक-रत्न-
द्युमच्चुम्बितुं प्रेयसो यत्र यत्नः।।१०।।

स्फुटद्बन्धुजीव-प्रभाहारि-दन्त-
च्छदद्वन्द्वमाभाति तस्या यदन्तः।
स्मितज्योत्स्न्या क्षालितं या सतृष्णं
चकोरीकरोत्यन्वहं हन्त ! कृष्णम्।।११।।

न सा विन्दते पाकिमारुण्य भाजि-
च्छविर्यत्तुलां दाडिमीबीजराजिः।
कथं वर्ण्यतां यात्वियं दन्तपंक्ति-
र्मुकुन्दाधरे पौरुषं या व्यनक्ति।।१२।।

मुखाम्भोज-माधुर्यधारा वहन्ती
यदन्तः कियन्निम्नतां प्रापयन्ती।
किमेषापि कस्तूरिका-बिन्दुभृत्तं
हरिं किं दधानं विभात्यास्यवृत्तम्।।१३।।

स कण्ठस्तडित्-कम्बु-सौभाग्यहारि
त्रिरेखः पिक-स्तव्य-सौस्वर्यधारी।
स्रजं मालिकां मालिकां मौक्तिकानां
दधत्येव यः प्रेयसा गुम्फितानाम्।।१४।।

उरोजद्वयं तुंगता - पीनताभ्यां
समं सख्ययुक् कृष्णपाण्यम्बुजाभ्याम्।
नखेन्दुर्यदोदेतुमिच्छां विधत्ते
तदा कंचुकः कालिका नापि धत्ते।।१५।।

म्रदिम्ना शिरीषस्य सौभाग्यसारं
क्षिपन्त्या वहन्त्या भुजाभोगभारम्।
तुलाशून्य सौन्दर्यसीमां दधत्या
निजप्रेयसेऽजस्रसौख्यं ददत्याः।।१६।।

श्रितायाः स्वकान्त-स्वतां कम्रगात्र्याः
श्रियाः श्रीविलासान् भृशं खर्वयन्त्याः।
गतांसद्वयी-सौभाग्यैकान्तकान्तं
यदा पाणिनोत्क्रामयेत् सालकान्तम्।।१७।।

तडिद्धामभृत-ककंणानद्धसीमा
घनद्योत-चूड़ावली सास्त्रसीमा।
चकास्ति प्रकोष्ठद्वये या स्वनन्ती
स्मराजौ सुखाब्धौ सखीः प्लावयन्ती।।१८।।

तदा भाति रक्तोत्पलद्वन्द्व-शोचि-
स्तिरस्कारि-पाणिद्वयं यत्ररोचिः।
शुभांकावलेः सौभगं यद व्यनक्ति
प्रियान्तर्हृदि स्थापने यस्य शक्तिः।।१९।।

नखज्योतिषा भान्ति ताः पाणिशाखाः
करोत्यूर्मिकालंकृता या विशाखा।
समासज्य कृष्णांगुलीभिर्विलास-
स्तदासां यदा राजते हन्त ! रासः।।२०।।

जनित्यैव नाभी सरस्युद्गता सा
मृणालीव रोमावलीर्भाति भासा।
स्तनच्छद्मनैवाम्बुजाते यदग्रे
मुखेन्दु-प्रभा-मुद्रिते ते समग्रे।।२१।।

कृशं किन्तु शोकेन मुष्टिप्रमेयं
न लेभे मणिर्भूषणं यत् पिधेयम्।
निबद्धं बलीभिश्च मध्यं तथापि
स्फुटं तेन सुस्तव्य-सौन्दर्यमापि।।२२।।

क्वणत्-किंकिणी-मण्डितं श्रोणिरोधः
परिस्फारि यद वर्णने क्वास्ति बोधः।
कियान् वा कवेर्हन्त ! यत्रैव नित्यं
मुकुन्दस्य दृक्खञ्जनोऽवाप नृत्यम्।।२३।।

प्रियानंग - केलिभरैकान्तवाटी-
पटीव स्फुरत्यञ्चिता पट्टशाटी।
विचित्रान्तरीयोपरि श्रीभरेण
क्षिपन्ती नवेन्दीवराभाम्वरेण।।२४।।

कदल्याविवानंग-मांगल्य-सिद्धौ
समारोपिते श्रीमदूरू समृद्धौ।
विभातः परं वृत्तता-पीनताभ्यां
विलासैः हरेश्चेतनाहारि याभ्याम्।।२५।।

विराजत्यहो ! जानुयुग्मं पटान्तः
समाकर्षति द्रागथाप्यच्युतान्तः।
यदालक्ष्यते तत्र लावण्यसम्पत्
सुवृत्तं लसत्कानकं सम्पुटं तत्।।२६।।

तनुत्वं क्रमान्मूलतश्चारुजंघे
प्रयातः परिप्राप्त-सौभाग्यसंघे।
पदाम्भोजयोर्नीलता धारयन्त्यौ
स्वभामन्तरीयान्तरे गोपयन्तौ।।२७।।

जयत्यंघ्रि - पंकेरुह द्वन्द्वमिष्टं
दलाग्रे नखेन्दु-व्रजेनापि दृष्टम्।
क्वणन्नूपुरं हंसकाराव - भक्तं
हरिं रञ्जयत्येव लाक्षारसाक्तम्।।२८।।

दराम्भोज-ताटंक-वल्ली-रथाद्यै-
र्महालक्षणैर्भव्य-वृन्दाभिवाद्यैः।
युतं यत्तलं मार्दवारुण्यशालि
स्मृतं यद्भवेदच्युताभीष्टपालि।।२९।।

प्रिये ! श्यामलो लेढु भृंगो नलिन्या
मरन्दं पर दन्दशीति क्षुदन्या।
यदेतं वतेत्यच्चुतोक्त्याञ्चलान्त-
र्मुखाब्जे सितेन्दुं दधे सालकान्तः।।३०।।

तमालम्व्य लब्धौजसो माधवस्य
स्फुटं पाणि-चापल्यमल्पं निरस्य।
तया स्वाधरेः साधु कर्पूरलिप्तः
कृतो नेति नेत्यक्षरोद्गार-दीप्तः।।३१।।

स जागर्त्ति तस्याः परीवार-चेत-
स्तेऽनुक्षणं रम्य-लीला-समेतः।
अथाप्यष्टयामिक्यमुष्याः सपर्या।
यथाकालमाचर्यते तेन वर्या।।३२।।

इति श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्त्तिपाद कृतः
श्रीराधिकाध्यानामृत स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अज्ञात कवि कृत

श्रीराधाष्टकम्

यह राधाष्टक ब्रज में एवं उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के सत्संगों में प्रार्थना में आवृत्ति की जाती है। यह जनप्रिय है एवं लघु स्तोत्र संग्रह आदि में प्रकाशित प्राप्त होता है। संस्थान में अनुमान १६ वीं सदी की एक हस्तलिखित प्रति प्राप्य है। श्रीराधारानी के चरणों में कृपा प्राप्ति हेतु आर्त्तिपूर्ण प्रार्थना है। अतः इसे पाठावली के अन्तर्भुक्त किया गया।

श्रीराधाष्टकम्

हे राधे बृषभानु भूप तनये हे पूर्ण चन्द्रानने,
हे कान्ते कमनीय कोकिल रवे वृन्दावनाधीश्वरी।
हे मत्प्राण परायणे च रसिके हे सर्वयूथेश्वरी,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।१।।

हे श्याम कलधौत कान्तिरुचिरे हे कीर्त्तिदेवी सुते,
हे गान्धर्वा कलानिधेति सुभगे हे सिन्धुकन्यार्चिते।
हे कृष्णानन पंकज भ्रमरिके दामोदर प्रेयसी,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।२।।

हे गौरांग किशोरिके सुनयने कृष्णप्रिये राधिके,
हे वामाक्षी मनोज मान दलने संकेत संकेतिके।
हे गोवर्धननाथ चर्चित पदं गोपाल चूड़ामणे,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।३।।

हे वृन्दावन नागरी गुणयुते काश्मीर मुद्रांकिते,
रक्तालक्तक चर्चितांघ्रि कमले हे चारु बिम्बाधरे,
मुक्तादाम विभूषितांग लतिके हे नीलशाटीबृते,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।४।।

हे चन्द्रावलि सेविते सुललिते भद्रारमा बन्दिते,
पद्मा चम्पक मालिका नुत पदे हे तुंगभद्रा प्रिये।
हे तन्वंगि मृगाक्षि चारु नयने हे रत्न मंजीकले,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।५।।

रक्ताम्भोज चकोर मीन नयने हे स्वर्णकुम्भस्तनि,
फुल्लाम्भोज करे विलासिनि रमे इन्द्राणि सरांधिते।
हे वृन्दावन कुंज केलि चतुरे हे मानलीला करे,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।६।।

हे काञ्च्यादि विभूषितोरु रुचिरे हे मन्दहास्याननें,
गोलोकाधिप काम केलि रसिके हे गोकुलेश प्रिये।
कालिन्दीतट कुंजबास निरते हे शुद्धभाव प्रिये,
मत्स्वान्तोच्चवरासने विशमुदा मां दीनमानन्दय।।७।।

मुक्ताराधित पादपद्म युगले हे पार्वतीशेश्वरी,
श्रीमन्नन्द कुमार मार जनिके नीलालकावृन्मुखे।
राका पूर्ण नवेन्दु सुन्दर मुखे रामानुजानन्दिनी,
आगत्य त्वरितम् त्वमत्र विपिने मां दीनमानन्दय।।८।।

इति अज्ञातनाम केनचित् भक्तेन रचिता
श्रीराधाष्टकम् सम्पूर्णः।।

घटिका शतक, पण्डित श्रीवनमालीदास शास्त्री भागवताचार्य कृत

श्रीराधा–स्तोत्रम्

पं. वनमालीदास शास्त्री, चतुः–सम्प्रदाय महामण्डलेश्वर स्वामी कृष्णानन्द दास महाराज के कृपापात्र शिष्य थे। वृन्दावन में आपने श्रीकृष्णानन्द स्वर्गाश्रम नामक आश्रम की स्थापना की थी। आप आशुकवि, व्याकरण एवं भागवत के प्रकाण्ड पण्डित थे। राधारमण मन्दिर में विद्वत्गोष्ठी में उन्हें घटिका शतक की उपाधि से सम्मान किया गया। गोस्वामी ग्रन्थों की टीकायें एवं स्वतन्त्र रचनायें भी की। आपकी रचनाएँ प्रशस्ति, स्तुति, गीति मिलाकर सहस्रावधि है। प्रस्तुत राधा–स्तोत्रं आपने संस्थान में १९७६ में अनुष्ठित राधा संगोष्ठी में प्रस्तुत कर सुनाया था। भागवत रहस्य एवं छन्दों के ज्ञाता थे। सख्यरस उपासना के पोषक थे।

श्रीराधास्तोत्रम्

वयं श्रीराधायाः पदकमलयुग्मं प्रतिदिनं
नमामः शुद्ध्यर्थं कलिकलुष लिप्तस्य मनसः।
तथा प्रेम्ना यस्य प्रियसहचरीभिः प्रतिदिनं
कृता पूजा पुष्पैरपि च मुनिभिर्ध्यातमनिशम्।।१।।
वयं श्रीराधायाः करकमलयुग्मं प्रतिदिनं
स्मरामो भक्तेभ्यो वितरति मुहुर्यच्छमतुलम्।
तथा श्रीकृष्णांसे विलसति सदा रासरसिके
सखीवृन्दैर्यस्मिविरचितमहो चित्रकुलकम्।।२।।
मुखाब्जं राधायाः नयनपथमायातु लघु नः
सुनासं सुश्रौत्रं नयन कमलाभ्यामपि युतम्।
सुकेशं यस्मिंश्च भ्रुकुटियुगलं चाप सदृशं
तथेषद्धासाढ्यं विधिहरिहरैर्ध्यातमनिशम्।।३।।
जपामो राधाया मुनिजनकुलैर्यत्सुजपितं
प्रियं दिव्यं शन्दं वयमनुदिनं नाम विमलम्।
हरिस्तस्मै दत्ते लघु मुदितचेताः स्वभजनं
ह्यजस्रं यो राधां जपति मुदितः श्रीहरियुताम्।।४।।

इति श्रीवनमालिदास शास्त्रि घटिकाशतकेन विरचित
श्रीराधास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीराधिका-यन्त्र

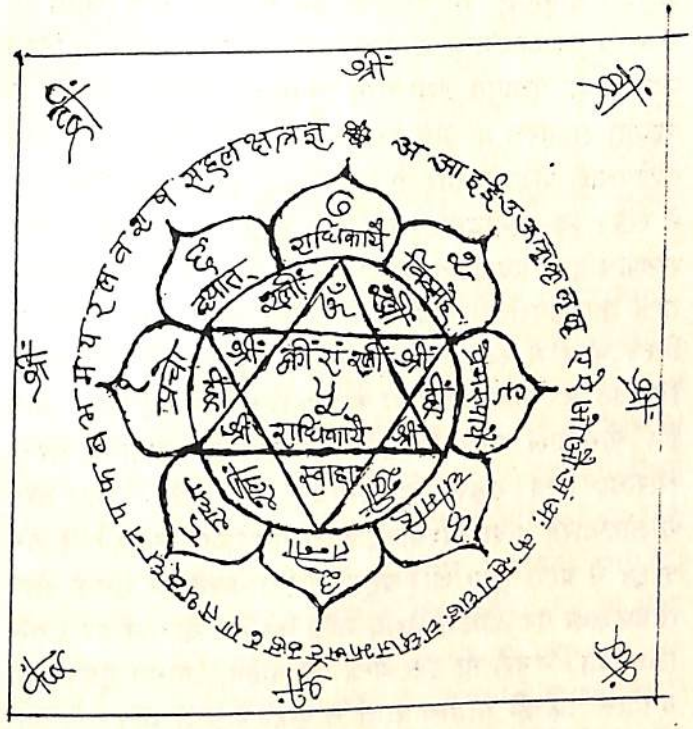

श्रीराधिका यन्त्र

यह यन्त्र राधिका पंचदशी यन्त्र कहलाता है। राधाष्टमी के दिन दीपावली या होलिका पर्व में ताम्र, स्वर्ण, चाँदी या भोजपत्र पर अष्टगन्ध से रचना कर अभिषेक करना चाहिए। पंचगव्य या पंचामृत तथा गंगा यमुनाजल से स्नान कराने के पश्चात् रक्तवस्त्र या पीत वस्त्र पर यन्त्र को रखकर पंचोपचार दशोपचार, षोडशोपचार से यथा साध्य पूजन कर नित्य पूजा में रखें। स्व–सम्प्रदायानुसार राधा मन्त्र से पूजन करें। यदि संस्थान द्वारा प्रकाशित श्रीगोपाल पाठावली में अंकित गोपाल यन्त्र को उपरोक्त विधि से प्रतिष्ठित कर, उभय यन्त्र को नित्य पूजा में रखें, तो श्रीराधाकृष्ण युगल की कृपा प्राप्ति निश्चित है। साथ ही साथ मनोवांछित कामनाएँ सिद्ध होती हैं। श्रीगोपाल यन्त्र तो प्रायः उपलब्ध हो जाता है परन्तु श्रीराधा यन्त्र सहसा दृष्टिगोचर नहीं होता। यह यन्त्र गोलोकवासी बाबा श्रीश्यामदासजी महाराज निम्बार्की से सन् १९६४ में प्राप्त हुआ था। बहुत प्रार्थना करने पर उनके सेव्य ताम्रफलक पर अंकित उभय यन्त्र को मैंने कागज पर उतार लिया था। उनसे ही इस यन्त्र की महिमा अवगत हुई। उन्हें बनवासी किन्हीं गौड़ीय सन्त ने पूजा हेतु दी थी।

– सम्पादक

वृन्दावन शोध संस्थान

• एक परिचय •

वृन्दावन शोध संस्थान की स्थापना डॉ. रामदास गुप्त के सद्प्रयत्नों से सन् १९६८ में हुई थी। वृन्दावन के लोई बाजार की एक पुरानी धर्मशाला के दो कक्षों में आरम्भ हुआ यह संस्थान अब रमणरेती में आकर्षक हरीतिमा के बीच गुलाबी पत्थर के एक भव्य भवन में स्थित है। संस्थान का संचालन वृन्दावन शोध समिति द्वारा होता है जो एक पंजीकृत समिति है। संस्थान मुख्यतः केन्द्र तथा उत्तरप्रदेश सरकारों द्वारा वित्तपोषित है और इसकी शासी परिषद् में उनका समुचित प्रतिनिधित्व है।

संस्थान में लगभग २७००० हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी, बँगला, ओड़िया, पंजाबी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि सभी भारतीय भाषाओं तथा लिपियों के ग्रन्थ शामिल हैं। लगभग २१००० ग्रन्थों के कैटलॉग प्रकाशित हो चुके हैं तथा शेष पर काम चल रहा है। विषय की दृष्टि से इस ग्रन्थ–संग्रह में अद्भुत विविधता है। धर्म, दर्शन, कर्मकाण्ड, काव्य के अतिरिक्त ज्योतिष, आयुर्वेद, शिल्पशास्त्र, शालिहोत्र, कामशास्त्र, रत्नशास्त्र आदि के ग्रन्थ भी इस संग्रह में उपलब्ध हैं। समय–समय पर इस ग्रन्थराशि की जाँच में ऐसे ग्रन्थ मिलते रहते हैं जिनका नाम या जिनके रचनाकार का नाम या दोनों ही अभी तक अज्ञात रहे हैं। ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज, यथा शाही फ़रमान, खाता बही, पत्राचार आदि भी संस्थान में सुरक्षित हैं। हस्तलिखित सामग्री के रख–रखाव तथा संरक्षण के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा चलायी जा रही एक संरक्षण प्रयोगशाला, माइक्रोफ़िल्मिंग के अत्याधुनिक उपकरण, फोटोग्राफी अनुभाग आदि शोधार्थियों की सहायता के लिये संस्थान में

अनवरत कार्यरत हैं। शोधार्थियों की सुविधा के लिये संस्थान में एक सन्दर्भ पुस्तकालय तथा एक अतिथिशाला भी है। हस्तलिखित ग्रन्थादि के अतिरिक्त संस्थान में एक ब्रजसंस्कृति संग्रहालय भी स्थित है जिसमें ब्रज की कला और शिल्प सम्बन्धी सामग्री प्रदर्शित है।

भारतीय इतिहास, साहित्य तथा संस्कृति से सम्बन्धित किसी भी विषय पर शोध तथा प्रकाशन संस्थान के कार्यक्षेत्र में शामिल है यद्यपि ब्रजक्षेत्र के ऊपर इसका विशेष बल है। तदनुसार ब्रजमण्डल की साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवम् पुरातात्विक निधि का संग्रह, संरक्षण, अध्ययन, शोध और प्रकाशन संस्थान का मुख्य उद्देश्य है। संस्थान डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा हिन्दी और संस्कृत में पी–एच. डी. की उपाधि हेतु शोध–कार्य के लिये शोध–केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है और संस्थान में अनेक देशी–विदेशी विद्वानों ने शोध कार्य किये हैं।

सम्प्रति संस्थान एक महत्त्वाकांक्षी प्रकाशन योजना कार्यान्वित करने में संलग्न है और आगामी वर्षों में कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाश में आने की आशा है।

संस्थान विद्वानों और जन–साधारण के आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करता है तथा समानधर्मी संस्थाओं के साथ मिलकर भारतीय संस्कृति की सेवा करने का इच्छुक है। संस्थान का सभी से एकमात्र निवेदन है, "सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा में हमारी सहायता करें।"

संस्थान को दान या चन्दे के रूप में दी जाने वाली राशि भारतीय आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन–281121, उ. प्र., भारत
फ़ोन–(0565) 2540628 • फ़ैक्स–(0565) 2540276

• ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं •

वृन्दावन शोध संस्थान के प्रकाशन

Publications of the Vrindavan Research Institute

CATALOGUES

1. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part-I, Rs. 95.00
2. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part-II, Rs. 170.00
3. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part III, Rs. 125.00
4. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part IV, Rs. 175.00
5. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part V, Rs. 225.00
6. A Catalogue of Hindi Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part I, Rs. 65.00
7. A Catalogue of Hindi Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part II, Rs. 180
8. A Catalogue of Bengali Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Rs. 150.00
9. A Catalogue of Manuscripts Microfilmed by the VRI, Part I, Rs. 85.00
10. A Descriptive Catalogue of Punjabi Manuscripts in the VRI, Rs. 175.00

Note- A set of five parts of the Catalogues of Sanskrit Manuscripts is available at a concesssional price of Rs. 650 only.

शोधपरक पुस्तकें

1. ब्रज की रासलीला
   लेखक–प्रभुदयाल मीतल — रु. 100.00
2. दशश्लोकी (सटीक)
   सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक — रु. 30.00
3. केवलराम कृत रासमान के पद
   सम्पादक–एलन एंट्विसिल — रु. 30.00
4. Rasman Ke Pad
   Editor-A. W. Entwistle — Rs. 45.00
5. स्वामी चरणदास कृत रहस्य दर्पण एवं रहस्य चन्द्रिका
   सम्पादक–डॉ. रामदास गुप्त तथा डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी
   रु. 45.00 (पेपर बैक) रु. 60.00 (सजिल्द)
6. रसिक कर्णाभरण (लीला) — रु. 40.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–डॉ. नरेशचन्द्र बंसल — 60.00 (सजिल्द)
7. स्मरण दर्पण — रु. 25.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–गोपालचन्द्र घोष — रु. 35.00 (सजिल्द)
8. यमुना एवं यमुनाष्टक — रु. 110.00 (पेपर बैंक)
   सम्पादक–वृन्दावन बिहारी गोस्वामी — रु. 125.00 (सजिल्द)
9. छन्दः कौस्तुभः — रु. 150.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक — रु. 175.00 (सजिल्द)
10. मथुरा माहात्म्य — रु. 100.00 (पेपर बैक)
    सम्पादक–डॉ. उमा भास्कर — रु. 150.00 (सजिल्द)
11. Vrindavana in Vaishnava Literature
    by Dr. Maura Corcoran — Rs. 375.00
12. ब्रज की लोक–कथाएँ — रु. 80.00 (पेपर बैक)
    लेखक–डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी — रु. 90.00 (सजिल्द)
13. An Early Testamentary Document in Sanskrit
    by Tarapada Mukherjee and J. C. Wright — Rs. 10.00
14. Vaishnava Tilakas by A. W. Entwistle Rs. 200.00 (Paper Back)
15. श्रीगोपाल पाठावली
    सम्पादक–चन्द्रधर त्रिपाठी तथा गोपालचन्द्र घोष
    रु. 40.00 (पेपर बैक) रु. 100.00 (सजिल्द)
16. चन्द्रकला
    सम्पादक–डॉ. नरेशचन्द्र बंसल — 350.00 (सजिल्द)
17. शृंगार सरसी
    सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक — 350.00 (सजिल्द)
18. श्रीराधिका पाठावली
    सम्पादक–गोपालचन्द्र घोष — 100.00 (पेपर बैक)

प्राचीन ग्रन्थों तथा अन्य सांस्कृतिक निधियों के
संरक्षण में तत्पर

वृन्दावन शोध संस्थान

रमण रेती, वृन्दावन-२८११२१ (उ.प्र.) भारत

Vrindavan Research Institute

Raman Reti, Vrindavan-281121 (U. P.) INDIA

• Chitralekha 2442415